छपावनार शेठ. कालीदास जसराज मु. मोरवी

जयग्रंथ माला नंबर (५) मो.

जैनज्ञाननी माहेतिआपनार, व्हेवारिक उच्चशैलिपर दोरनार, आरोग्यताना मूलतत्त्वो समजावनार, विगेरे अनेक फायदा कारक होवाथी-दरेक महाशयोने खास राखवा योग्य.

श्रावक धर्म.

भाग १ लो.

कर्ता.

साक्षरशिरोमणि. सद्ग्रंथकार,

संशयतिमिर भास्कर. तत्त्वज्ञ;

श्रीमान् जयचंद्र महाराज.

धर्मज्ञान ज्योतिष वैदक विगेरे विषयोना अनेक ग्रंथ कर्त्ता

दोहरो:-जन्म लइ संसारमां, दानकरो गुणवंत;
दाने दोलतसंपजे. तेमज सुख अनंत.१

आवृत्ति २ जी. प्रत ५५०

सने १९२१ संवत १९७६

छपावनार शेठ. कालीदास जसराज मु. झरीआ

जयग्रंथ माला नंबर (५) मो

जैनज्ञाननी माहेति आपनार, व्हेवारकि उच्चशैलिपर दोरनार, आरोग्यताना मूलतत्त्वो समजावनार, विगेरे अनेक फायदा कारक होवाथी–दरेक महाशयोने खास राखवा योग्य.

श्रावक धर्म.

भाग १ लो.

कर्त्ता.

साक्षरशिरोमणि, सहस्त्रकार,

संशयतिमिर भास्कर, तत्त्वज्ञ;

श्रीमान् जयचंद्र महाराज.

धर्मज्ञान ज्योतिष वैदक विगेरे विषयोना अनेक ग्रंथ कर्त्ता

दोहरोः-जन्म लइ संसारमां, दानकरो गुणवंत;
दाने दोलतसंपजे. तेमज सुख अनंत १

आवृत्ति २ जी. प्रत ५५०

सने १९२१ संवत १९७६

श्रावकोने बोध.

सुज्ञ महाशयो ! आपणामां जमानाने अनुसरता शैलीमां लखाएल पुस्तकोनी घणी खामी छे.

ते खामी दूर करवा आ पुस्तकनी रचना करी छे.

नाळिएर लाडवा पतासा विगेरेनो प्रभावना करवा करतां आ पुस्तकनी प्रभावना करवाथी आपणी घणी उन्नति थशे आ विषे नीचेनी ५ कलमो विचारो.

१. खीस्ती लोको दरवर्षे पोताना धर्म पुस्तकोनो हजारो नकल मफत व्हेचे छे.

२. ज्ञानमार्गथी तेओए क्रोडो मनुष्योने पोताना तरफ वाळ्या छे

३. जैनोनी वस्ती छेक घटती जायछे तेनुं कारण एके आपणामां ज्ञाननी घणी खामी छे.

४. प्रथम जैनोनी वस्ती ५० लाखनी हती हाल मात्र १० लाखनी रही छे माटे हजी पणचेतो अने ज्ञानदान करी तेटलाने पण राखवानो प्रयास करो.

५. सद्ज्ञान घंटनादः—भगवान् वीर फरमावे छे के अन्नदान वस्त्रदान कीर्त्तिदान करता ज्ञानदान क्रोड दरज्जे चडे छे माटे ज्ञानदान करी जन्म सफल करो !!!

अनुक्रमणिका.

ग्रंथकर्त्तानी अमूल्य प्रतिज्ञा.

(राग० मनहर.)

ज्ञानमार्ग सौनो एक, क्रियामार्ग छे अनेक;
तथी ज्ञानमार्ग मुनि, जयचंद्र के'नार छे ॥१॥

अवश्य वांचो !

साक्षर शिरोमणि, सहस्रकार, संशयतिमिर भास्कर, तत्त्वज्ञ **श्रीमान् जयचंद्र महाराज** साहेबे धर्म ज्योतिष् वैदक विगेरे विषयो उपर अनेक पुस्तको बनावेल छे तेमां १० नां नाम.

१–५ **श्रावकधर्म ५ भागः**—आमां श्रावकोना धर्मनी घणीज उत्तमरीते स्पष्ट समजुती आपेली छे.

६–१० **जैन धर्मनी माहेती ५ भाग**—आ पुस्तकोमां जैनधर्मनुं ज्ञान एवा धोरणपर लखवामां आव्युं छे के कोइ अन्यधर्मी वांचे तो ते पण जैनधर्म स्वीकारे.

☞ कोई महाशयने छपावा प्रसिद्ध करवानी इच्छा थाय अगर छपावेल १००–२०० कोपीना ग्राहक थवानी इच्छा थाय तो महाराजश्रीने पुच्छवुं

'श्री जैन विद्याविजय प्रीन्टींग प्रेसमां' शा पोपटलाल अमथाशाए छप्युं रीचीरोड–अमदावाद.

प्रस्तावना.

(आ पुस्तक बनाववानो हेतु.)

१. जैनबंधुओ ! आ पुस्तक पहेलेथी छेल्ले सुधी वांचीने मनन करवा प्रयत्न करशो.

२. केटलाकने एवी टेव होय छे के एकाद पानुं जेवुं तेवुं वांची एकदम पुस्तकने निःसारगणी काढे छे—तेम तमे न करता धैर्यतापूर्वक विचारो विचारीने संपूर्ण वांचशो.

३. आ पुस्तक एवा धोरणपर रचवामां आव्युं छे के जैनशालाना विद्यार्थीओ तेमज मोटी उमरना माणसोने पण उपयोगी थई शके.

४. ज्यां सुधी व्यवहारिक नीति न शीखवाडवामां आवी होय त्यां सुधी धार्मिकनीति सीखवाडवी ते नकामी छे, दाखला तरीके कोइ सामायिक प्रतिक्रमण करे पण मा बापने गाळ आपतो होय ते शुं कामनुं.?

५. एटला माटे आ पुस्तकमां व्यवहारिक तेम धार्मिक बन्ने ज्ञाननो समावेश करवामां आवेल छे.

६. धार्मिक ज्ञानमां प्रथम पगथीआ रूप—श्रावकना २१ गुण, सामायिक, प्रतिक्रमण, नवतत्त्व विगेरेनी सम-

जुती घणीज स्पष्टरीते जणावेल छे; ते परीते के—प्रथम मूळ्य वीना पछी कविता अने छेवट प्रश्नोत्तर एम त्रण त्रण रीते दर्शावेल छे.

७. जैननुं व्यवहार संयुक्तज्ञान कोइपण पुस्तकमां प्रगट करवामां आव्युं होय तो ते आज छे.

८. अत्यार सुधीमां कोईपण पुस्तक आवा धोरणपर रचाएल नथी.

९. समयना परावर्त्तन साथे पुस्तकनो कृत्तिमां पण परावर्तन थवुं जोईए, अशलना पुस्तको संस्कृतमां के जुनी गुजराती भाषामां होय ते हालना जमानाने अनुकुल नज थई शके ए स्पष्ट छे.

१० आ पुस्तकना ५ भाग बनाववामां आव्या छे तेमां आ प्रथम भाग छे—आनो जो कदर कराशे तो बीजा चारे छपाववामां आवशे.

ली. शा. कालीदास जशराज.
मु. झरीआ.

आ पुस्तक माटे विद्वानोना अभिप्रायो.

साक्षरशिरोमणि, सहस्त्रकार, संशयतिमिर भास्कर, तत्त्वज्ञ; श्रीमान् 'जयचंद्र' महाराज!

श्रावक धर्म वांचीने बहु आनंद पाम्यो छुं. इनाम देवा माटे २०० कोपी वी. पी. थी मोकलाववा कृपा करशो.

ली० आपनोदाश प्राणजीवन हंशराजनी वंदना.

मु० जामनगर.

परमपूज्य साक्षरशिरोमणि सहस्त्रकार श्रीमान् जयचंद्र महाराज साहेब!

आपश्रीनु बनावेल 'श्रावकधर्म' नामे पुस्तक खरेखर जैनशालामां चलाववा योग्य छे तेमज दरेक जनोने भेट करवा लायक छे.

ली० आपनो शेवक देवजी जीवणनी वंदना.

मु० शिवगंज.

प्रातःस्मरणीय साक्षरशिरोमणि श्रीमान् जयचंद्र महाराज साहेब! नमस्कार साथे जणावुंछुं के आ पुस्तक

जैनशालामां खास चलाववा योग्य छे अने आशा छे के दरेक श्रावको तेम करशे.

ली॰ डा॰ शिवचंद कल्याणजी, मु॰ जबलपुर.

परम पवित्र महाराज साहेब जयचंद्रजी!

पुस्तक वांचता परम अहलाद थयो छे.

कृपाकरी १२५ कोपी वी. पी. थी मोकलावशो.

बीजी कोईपण धर्मशेवा फरमावशो.

ली॰ आपनो चरणरज श्रावक सुजानमल जेठाजीनी त्रीकाल वंदना स्वीकारसो.

मु॰ आगरा.

शास्त्रवेत्ता साक्षरशिरोमणि सहस्त्रकार,

श्रीमान् जयचंद्र महाराजा साहेब!

'श्रावकधर्म' जोई आनंद पाम्यो छुं. दरेक महाशयने हुं भलामण करुंछुं के आवा अमूल्य पुस्तकोनी साम्टी नकलो खरीदी भेट करी मनुष्य जन्म सार्थक करशो.

ली॰ मास्तर मागजी आनंदजीना नमस्कार.

मु॰ पोरबंदर.

हवेथी जे कोई महाशयोना अभिप्राय आवशे ते बीजी आवृत्तिमां छपाशे.

ग्रंथकर्त्तानो संक्षिप्त वृत्तांत.

[ग्रंथकर्त्ता एटले आ पुस्तकना बनावनार–साक्षर-शिरोमणि, सहस्त्रकार, संशयतिमिरभास्कर, तत्त्वज्ञ, श्रीमान् जयचंद्र महाराज साहेबनो–संक्षिप्त वृत्तांत एटले टुंकमां इतिहास.]

१. महाराज साहेबनो जन्म पूर्व देशमां अल्हाबाद (प्रयागराज) पासे 'माला' नामे राजधानी नगरमां मोसालमां छे.

२. ज्ञाते 'कसरवानी' वणिक–धर्म 'वैष्णव.'

३. नानानुं नाम 'विहारी प्रशाद.'

४. नानीनुं नाम 'घुरा'बाई.

५. संवत् '१९४२' गुरुनी महादशामां जन्म छे.

६. सातमे वर्ष मोसालथी ७ गउ छेटे 'सीरसा' नामे पिताना गामे आव्या.

७. दादानुं नाम 'अयोद्धा प्रशाद.'

८. पिताश्रीनुं नाम 'महादेव प्रशाद.'

९. माताश्रीनुं नाम 'बहुधा' बाई.

१०. नवमे वर्षे द्वारिकानी यात्रा करी काठीयावाडमां आवेल पोरबंदर सहेरथी १२ कोश छेटे भाणवड नामे गाममां संवत् १९५१मां ढुंडोया धर्मना मुनि श्रीमगनलालजी महाराज नामे गुरुनो योग मल्यो.

११. ते गुरुनी पासे ५ वर्ष धर्म ज्ञाननो अभ्यास करी संवत् १९५६मां चैत्र शुक्ल तेरसे १३ वर्षनी उमरे ढुंढक दीक्षा लीधी.

१२. संवत् १९६७थी अलग चतुर्मास करवानी शरुआत थई.

१३. संवत् १९६९ नी सालमां 'जैन श्वेतांबर धर्म' स्वीकार्यो.

१४. गच्छ भगवान् महावीरनो अने गुरु पण तेज.

१५. महाराज साहेबनी प्रवृत्ति ज्ञान-मार्ग उपर विशेष छे

१६. हिंदु मुसलमान पारसी ख्रीस्ती विगेरे कोईपण कोमना जिज्ञासुओनी धर्मसंबंधी शंकाओनुं अच्छि रीते समाधान करे छे.

१७. शांतिभाव राखवो ए एमनो मुख्य उद्देश छे.

१८. कोइ जातनो आडंबर नही राखवो, ज्ञानमार्गमां प्रवर्त्तवुं, लोकोने ज्ञानमार्ग बतावबो—ए खास जीवन सूत्र छे.

१९. कोइ परधर्मीओनी साथे वितंडावाद न करतां तेमने मीठाशथी सत्य धर्मनुं स्वरूप समजाववुं.

२०. वस्तुनुं—हेतु कारण प्रमाण प्रमेय विगेरे युक्तिसहीत कहेवामां आवे छे.

२१. सातनय चारनिक्षेप द्रव्यभाव निश्चय व्यवहार स्याद्

आद रसभर शैलीथी खुब मीठाशसमजाववा आवे छे.

२२. लोको ज्ञानमार्गमां केम वळे. तेओ सत्य केम समजे ए उपर वारंवार कथन करवामां आवे छे.

इत्यलम् ॐ शांति !

ली. चरणरज श्रावक–रूपाजी डायाजी.

ग्रंथकर्त्तानो अभ्यास.

सुज्ञ महाशयो ! आ बतावावानो हेतु ए छे के–कोइ पण जिज्ञासुने कोइपण विषयनो लाभ लेवो होय तो लेइ शकाय.

कंठस्थ (मुखपाठ)

१. सामायिक हेतु कारण विधि अर्थ सहित.
२. पंच प्रतिक्रमण हेतु कारण विधि अर्थ सहित.
३. भक्तामर विगेरे नवस्मरण मंत्रविधि अर्थ सहित.
४. जीवविचार नवतत्त्व दंडक विगेरे ७० प्रकरणो.
५. आगम उत्तराध्ययन मूल श्लोक २००० अर्थसहित.
६. आगम दशवैकालिक मूल श्लोक ७०० अर्थसहित.

७. महावीरस्तुति वि. छुटक श्लोक १००० अर्थसहित.
८. संस्कृत व्याकरण संपूर्ण, अमरकोश, रघुवंश काव्य.
९. प्राकृत (मागधि व्याकरण अर्धभाग).
१०. अलंकारमाला, छंदशास्त्र (पिंगल), शिल्पशास्त्र.
११. मंत्रमहोदधि, यंत्रविधि, रमल, स्वरोदय, सामुद्रिक.
१२. ज्योतिष, प्रतिष्ठाविधि, मुहूर्तसिद्धि, तंत्रक्रिया.
१३. शकुनफल, स्वप्नफल, अंगस्फुरणफल, वैदक.
१४. अंकगणित, अक्षरगणित, लीलावती-गणित.
१५. चंद्रप्रज्ञप्ति, सूर्यप्रज्ञप्तिनुं गणित, जीवो विगेरेनुं गणित.
१६. अनुपूर्वि गंगीया अणगार विगेरेनां भांगाओनुं गणित.
१७. यम, नियम, ८४ आसन, ध्यानविधि विगेरे योगना ८ अंग.
१८. वैराग्यनां १०० पद, आनंदघनजीकृत चोवीशी.

वांचन मनन.

१. आगम ४५ संपूर्ण मूल टीका विगेरे पंचांग सहित.
२. आगमसार नयचक्रसार कर्मग्रंथ विगेरे ११०० उत्तम ग्रंथो.
३. समयसार नाटक विगेरे ५० अनहद ज्ञानगर्भित ग्रंथो.

४. चंदरास, श्रीपालरास, रामरास विगेरे १०० रासाओ.

अवलोकन.

१. वैष्णव, स्वामीनारायण, आर्यसमाज, मुसलमान ख्रीस्ती विगेरे धर्मोना अनेक पुस्तको, उपरांत कायदाना पुस्तको, नवलकथाओ विगेरे एकंदर कुल (१००००) पुस्तको.

कृति.

१. आगम उत्तराध्ययननुं पद्यरूप गुर्जर भाषान्तर.

२. आगम दशवैकालिकनुं पद्यरूप गुर्जर भाषान्तर.

३. बृहत् शब्दरूपावली. ४. बृहत् धातुरूपावली. ५. वैद्कसार. ६. ज्योतिषसार. ७. एकविंशविद्या. ८. जीवविचार, नवतत्त्व, दंडक ६ लेश्या, १४ गुणस्थानक विगेरेनी स्पष्ट समजुतिसहित ज्ञाननां १०० आंबाओ.

आ विगेरे अनहद ज्ञान आपनार अनेक पुस्तको बनावेल छे.

ग्रंथकर्त्तानो विहार.

महाराज साहेबे अनेक देशामां विहार करेल छे ते नीचे मुजब:—

१. पूर्वदेश. २ सौराष्ट्र देश (काठीआवाड, कंठाल) ३ पंचाल देश. ४ गुर्जरदेश. ५ मारुदेश (मारवाड). ६ खानदेश. ७ वराडदेश. ८ बंगालदेश. ९ सौंत्रदेश. १० महाराष्ट्र देश (दक्षिण). ११ मलबारदेश. १२ तैलंग देश.

कया सालमां कये गामे चतुर्मास करेल छे अने व्याख्यानमां शुं शुं वांच्युं? तेनी विगत.

१. संवत् १९५१ मां भाणवड (काठीयावाड) गामे विद्यार्थी तरीके धार्मिक अभ्यास.
२. संवत् १९५२ बोलखा विद्यार्थी तरीके धार्मिक अभ्यास.
३. सं० १९५३ दीवबंदर „ „
४. सं० १९५४ मांगरोलबंदर „ „
५. सं० १९५५ गोंडल शहेर „ „
६. सं० १९५६ दीक्षानुं प्रथम चतुर्मास वेरावळबंदर व्याख्यानमां दशवैकालिकसूत्र.

७. सं० १९५७ लस्कर व्याख्यानमां वांचन उत्तराध्ययन
८. सं० १९५८ वीसलपुर ,, ,, उपाशकसूत्र
९. सं० १९५९ वढवाणशहेर ,, ,, जंबूद्वीपपन्नत्ती
१०. सं० १९६० वीरमगाम ,, ,, अनुत्तरोववाई
११. सं० १९६१ मोटो चांतीज ,, ,, जीवाभिगम
१२. सं० १९६२ सुरत संगरामपुरा ,, भगवतीसूत्र
१३. सं० १९६३ बोटाद ,, ,, ठाणांगसूत्र
१४. सं० १९६४ अमदावाद छींपापोल ,, भगवती
१५. सं० १९६५ सायला ,, ,, उववाई
१६. सं० १९६६ जामनगर ,, ,, पन्नवणा
१७. सं० १९६७ पाटण (गुजरात) ,, भगवती
१८. सं० १९६८ दाहानुबंदर ,, ,, रायपसेणी
१९. सं० १९६९ अमदावाद
देवसाने पाडे ,, ,, उत्तराध्ययन
२०. सं० १९७० ,, ,, ,, ,,
२१. सं० १९७१ सुरत गोपीपुरा ,, अनुयोगद्वार
२२. सं० १९७२ कठोर (जीलो सुरत) ,, कल्पसूत्र
२३. सं० १९७३ वलसाड ,, ,, ,,
२४. सं० १९७४ निपाणी (दक्षिण) ,, ठाणांग
२५. सं० १९७५ अलपाई (मलबार) ,, रायपसेणी

महाराजश्रीने दरेक चोमासिक गामना श्रावको घणाज धामधूमथी तेडवा आवेल तेमज चातुर्मासनां पूर्ण भक्तिभाव करेल छे.

दरेक गामना श्रावकोने तेमना विषे संपूर्ण संतोष रहेल छे.

ली० चरणरज श्रावक-रूपाजी डायाजी.

ज्ञान दान करो !

जैनबंधुओ! श्रीमान् जयचंद्र महाराज कृत 'श्रावकधर्म' नामे अमूल्य पुस्तकना ५ भाग छे के जे जमानाने अनुसरता होवाथी छपावी भेट करवाथी धर्मनो वणोज लाभ मलशे.

श्रावक धर्म भाग २ जो.

आ पुस्तकमां निचे मुजब विषयो समावेला छे के जेथी पुस्तकनी उपयोगिता स्पष्ट समजाशे.

१. देव गुरु धर्म ए ३ महातत्त्वनो समजुतो.

२. सात क्षेत्रमां हालकाले कयुं क्षेत्र विशेष पोषवा योग्य छे.

३. पृथ्वी पाणी अग्नि विगेरेमां जीवोनी साबीती.
४. छलेश्याना आकार रूप रंग विगेरेनी माहेती.

श्रावक धर्म भाग ३ जो.

आ पुस्तकमां नीचेनी बीनाओ मुख्य छे.

१. आठ प्रकारना कर्मोनुं आबेहुब स्वरूप
२. कर्मोने क्षय करवाना सरल उपायो.
३. चोवीस दंडकनी सरस माहती.
४. अनेक चउभंगीयोनु स्वरूप.

श्रावक धर्म भाग ४ थो.

नीचे मुजब विषयोथी आ पुस्तक अलंकृत करवामां आवेल छे के जेथी वांचकवृंदने अल्हाद उपजे.

१. छ आराओनुं स्वरूप विस्तार सहीत.
२. कल्पवृक्ष मेरूपर्वत विगेरे क्यां छे? तेनो उत्तर.
३. गणधर महाराजने जे ३ तत्त्वनो उपदेश मलेछे तेनी स्फुट व्याख्या.
४. ज्ञानवर्णिय मोहनीय अंतराय ए ३ कर्मोने तत्काल तोडवाना मार्गो

श्रावक धर्म भाग ५ मो.

नीचे प्रमाणे विषयोथी आ पुस्तक सुशोभित करवामां

आवुं छे के जेथी वांचनार सज्जन भारी ज्ञाननो लाभ मेलवी शके

१. त्रण प्रकारना आत्माओनुं स्वरूप.

२. सप्तसंगीनुं स्वरूप.

३. कर्मबंधनुं प्रकट स्वरूप

४. प्राणायाम ध्यान विगेरे करवानी विधि.

ज्ञाननी प्रभावना करो !!

सुज्ञ महाशयो ! नाम प्रमाणे गुणसहित 'जैनधर्मनी माहेती' नामे पुस्तक अनहद श्रम लेइ श्रीमान् जयचंद्र महाराजे जैन धर्मनो खुबी सर्व (हिंदु मुसलमान पारसी ख्रीस्ती विगेरे) ने मालुम पडे ए हेतुथी बनावेल छे. पुस्तक रसदार शैलीथी लखाएल होवाथी सर्वने प्रीय-कारी छे. आ पुस्तकना पांचे विभागोनी टुंक अनुक्रम-णिका नीचे मुजब छे. आवा पुस्तको छपावी सर्वने भेट करवाथी आपणा धर्मनी घणी उन्नति थशे माटे कदरदान महाशयो आ बीना वांची अमलमां मूको.

जैन धर्मनी माहेती भाग १ लो.

आमां नीचे मुजब विषयो वर्णवेल छे.

१. दुनीयाना दरेक धर्मनी समज.

२. तेमां जैन धर्मनी श्रेष्ठता.
३. परमेश्वरे जगतने बनावेल छे के केम?
तेनो चमत्कारिक खुलासो.
४. आत्मानी साबीती अने तेनी सत्ता.

जैन धर्मनी माहेती भाग २ जो.

आमां नीचे मुजब विषयो वर्णवेल छे.

१. जीव कर्त्ता तेमज स्वयं भोक्ता छे तेनी साबीती.
२. जीवनी मुक्ति केम थाय? तेनो खुलासो.
३. कर्म ते शुं छे? चेतन के जड.
४. कर्म बंधनां कारणो.

जैन धर्मनी माहेती भाग ३ जो.

आमां नीचे मुजब विषयो वर्णवेल छे.

१. जीवोनी अनेक जातिओ अने तेनी व्याख्या.
२. पृथ्वी विगेरेमां जीव छे के केम?
३. मांसाहारथी मनुष्यने अनेक नुकसान.
४. फलाहारथी थता फायदाओनुं वर्णन.

जैन धर्मनी माहेती भाग ४ थो.

आमां नीचे मुजब विषयो वर्णवेल छे.

१. जैन योगनुं गहन स्वरूप.
२. श्रावकना १२ व्रतनुं स्वरूप.
३. प्रत्याख्याननुं स्वरूप.
४. चारित्रनुं स्वरूप.

जैन धर्मनी माहेती भाग ५ मो.

आमां नीचे मुजब विषयो वर्णवेल छे.

१. मुनि धर्मनी व्याख्या.
२. मुनि धर्मने लायक कोण ?
३. धर्म अने अधर्मनुं स्पष्ट फल.
४. जैन धर्मना बारीक सिद्धांतो उपरथो राज्य-कायदाओनुं बंधारण.

ॐ श्रीसद्गुरवे नमः

श्रावक धर्म.

भाग १ लो.

पाठ १ लो.

(श्रावकादिक शब्दना अर्थ विषे.)

मंगलाचरण.

(दोहरा.)

१. श्रीगुरुदेव दयानिधि, ज्ञानदान दातार;
पदपंकज प्रेमे नमुं, समरी तस उपकार.

२. गुरुदीवो गुरुदेवता, गुरुचिंतामणि सार;
महामंगल गुरुचरण छे, नहिं संदेह लगार.

३. जैनधर्म हितकारणे, करुं ग्रंथ तैयार.
वांची सर्व श्रावको, पामे ज्ञान श्रीकार.

४. ज्ञानदान उत्तम कह्युं, महामंगल पण एज;
एसम नहिं संसारमां, शांत सुधा सुखसेज.

५. दान करे जे भावथी, तेनो बहु यश थाय;
वळि पामे सुखसंपदा, एम कहे जिनराय.

सुज्ञ बंधुओ ! जैनमुनिना सेवको 'श्रावक' कहेवाय छे तेनो अर्थ नीचे मुजब :—

१. श्रावक शब्दना अर्थ बे रीते थाय छेः—१ शब्दार्थ. २ अक्षर उपरस्थापना अर्थ.

२. शब्दार्थ—ए छे के—सद्बोध श्रवण करे एटले सांभले ते श्रावक.

३. अक्षरस्थापना अर्थ—ए छे के—'श्र' = श्रद्धा, 'व'—विवेक अने 'क' — क्रिया; आ त्रण गुणेयुक्त होय ते 'श्रावक' कहेवाय.

४. श्रद्धा एटले—श्री वीतरागे जे धर्म प्रकाश्यो छे ते उपर आस्था.

५. विवेक एटले—धर्म अर्थ काम ए त्रणे पुरुषार्थ यथा समये अविरुद्धपणे साधे करे. १. धर्म एटले—दान, शिल, तप, भावना—आ चार प्रकारनो धर्म छे ते करे. २. अर्थ एटले—न्यायथी द्रव्य (धन) उपार्जन करे पण कपट विगेरे अन्यायथी द्रव्य उपार्जन करे नहीं. ३. काम एटले—भक्ष्य पदार्थनुं भोजन करे पण दारु, मांस, लसण, डुंगली विगेरे त्याग करवायोग्य पदार्थ जमे नहीं, स्व स्त्री थी संतोषित रहे, परस्त्री उपर खोटी दृष्टि करे नहीं, परने दुःखरुप गोजशोख करे नहीं विगेरे.

६. क्रिया एटले–देववंदन, श्रीगुरुवंदन, सामायिक, प्रतिक्रमण, पौषध विगेरे धार्मिक क्रिया अभिमान-रहीतपणे शुद्ध भावथी करे, मुनिने अन्नवस्त्र विगेरे जोइती चीज उत्कृष्ट भावथी वोरावे, ज्ञान पुस्तकोनी प्रभावना करे एटले परधर्म वालाने स्वधर्मना रागी बनाववा माटे जे ज्ञानी पुरुषोए ज्ञाननां पुस्तको बनाव्यां होय ते खरीदी व्हेंचे, गामोगाम जैन शालानां विद्यार्थीओने उत्तम ज्ञानना पुस्तको व्हेंचे

हवे जिन विगेरे शब्दोना अर्थ कहे छे.

१. जिन :–काम, क्रोध, लोभ, मोह, विगेरे आंतरिक (अंतरना) शत्रुओने जितेल होय ते.

२. वीतराग :–जेने राग द्वेष सर्वथा गयेल होय ते.

३. साधु :–पवित्र पुरुष, आत्मानुं साधन करनार.

४. निर्ग्रंथ :–कर्मरुप गांठ रहीत ते.

५. धर्म :–मूख्य फरज, संसारमां बुडता नावनी माफक जीवने धरी राखे ते.

६. राग :–स्त्री पुत्र घर विगेरे उपर स्नेह.

७. द्वेष :–दुश्मन प्रत्ये दुष्ट विचार ते.

८. सामायिक :–समभाव, शांतिभाव राखवो ते.

९. प्रतिक्रमण :–पापथी पाछु ओसरवुं (हठवुं) ते.

१०. तत्त्व :—मूख्य वस्तु, सारभूत.

११. सम्यक्त्व :—सत्यपणुं, साचाने साचुं मानवुं ते.

१२. मिथ्यात्व :—असत्यपणुं (खोटाने साचुं मानवुं ते)

१३. जीव :—चैतन्य वाळुं प्राणी.

१४. संसार :—आठ कर्म बांधी जिव चार गतिमां जन्म-मरण करे छे ते.

१५. मोक्ष :—आठ कर्मथी मुक्त थवुं ते.

पाठ २ जो.

ज्ञान विषे.

१. ज्ञान एटले जाणपणुं. सर्व वात जाणवी ते.

२. ज्ञानविना जीवनी मुक्ति कोई दिवस थती नथी.

३. श्रावकोए ज्ञाननी आराधना करवी. आराधना एटले सेवा.

४. ज्ञाननी आराधना ३ प्रकारे थई शके छे,—१ वर्तमान जमानाने अनुसरता ढबमां ज्ञानना पुस्तको करावदा. २ तेवा पुस्तको छपावीने व्हेंचवा. ३ छपावेल खरीदीने व्हेंचवा.

५. ज्ञानना मूख्य ५ भेद छे :—१ मति. २ श्रुत. ३ अवधि. ४ मनःपर्याय. ५ केवळ.

६. पांचेमां मुख्य उपकारी श्रुतज्ञान छे.

७. जे जीव ज्ञान भणे छे, भणावे छे, भणवानुं साधन मेळवी आपे छे ते जीव संसार समुद्रनो शीघ्र पार पामे छे.

८. जेओ ज्ञान् उपर अरुची राखेछे, ज्ञाननी आशातना करे छे तेओ क्रोडो कष्ट क्रिया करवावडे पण तरी शकता नथी.

९. जेओ ज्ञानीनी सेवा करे छे, ज्ञानीना कह्या मुजब वर्त्ते छे तेओ त्रीजे भवे अवश्य मोक्ष जाय छे.

१०. जेओ ज्ञानीनी कद्र करता नथी, ज्ञानीनी आज्ञानी बेदरकारी करेछे तेओ कदी मोक्ष सुख पामतानथी.

११. ज्ञान सर्व आराधिक अने क्रिया देश आराधिक एम श्री भगवती सूत्रमां कहेल छे.

१२. प्रथम ज्ञान ने पछी दया एम श्रीदशवैकालिक सूत्रमां कहेल छे.

१३. ज्ञान अने क्रियामां ज्ञान मुख्य छे.

१४. मोक्ष पामवाना हेतुभूत ४ छे; ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप एम उत्तराध्ययन सूत्रमां कहेल छे तेमां पण ज्ञान अवल दरज्जे छे.

१५. ज्ञानवडे एक पळमां, क्रोडो कर्मनो क्षय करी शकाय छे, एम समजी ज्ञान तथा ज्ञानीनी सेवा करवी.

पाठ ३ जो.

(श्रावक थवानी लायकात विषे.)

१. सद्गुरु, माता, पिता, ए ३ नी सेवा न करे ते धर्म करवाने अयोग्य छे एटले ते श्रावक थवाने पण नालायक छे.

२. उपर कहेल ३ जणनी जे तन मन अने धनथी सेवा करे तेज श्रावक थवाने मुख्य लायक छे.

३. बार महिना सुधीनो डंश (क्रोध) राखे नहीं ते श्रावकपणाने लायक छे कारणके ११ प्रकृतिने दूर कराय तोज श्रावक थइ शकाय छे ते ११नां नामः— १ अंतसुधीनो (एटले यावत्जीव सुधीनो) क्रोध. २ तेज रीते मान. ३ तेज रीते कपट. ४ तेजरीते लोभ. ५ बार महीना सुधीनो क्रोध. ६ तेज प्रमाणे मान. ७ तेज प्रमाणे कपट. ८ तेज प्रमाणे लोभ. ९ साची वातमां भ्रम. १० सत्यपणामां अनिश्चळ. ११ सत्यासत्यनो निर्णय करवानो अशक्ति.

४. जेओ परोपकार करे छे तेओज श्रावक थवाने लायक छे.

५. परधन अने परस्त्रीनो त्याग करनार, कोईनुं अपमान नहीं करनार, जुठी शाक्षी, थापण ओळववी, ए विगेरे त्याग करनार, पक्षपातरहीत, चक्षुमां सौम्यता

युक्त आ विगेरे सद्गुण सहीत होय ते श्रात्र कथवाने लायक छे.

पाठ ४ थो.

(श्रावक कोण कहेवाय ! ते विषे.)

दोहरा.

१. जिनमंदिरमां आवीने, पूजे प्रभु हमेश;
मुनिजनने वंदन करे, ते श्रावक सुविशेष.

२. सत्य वचन बोले सदा, क्रोध करे नहीं लेश;
परधन परनारी तजे, ते श्रावक सुविशेष.

३. पर उपकार करे घणो, दीए दान हंमेश;
विनय विवेक करे वळि, ते श्रावक सुविशेष.

४. पर आशा नव चित्तधरे, दीनता न करे लेश;
गुणग्राही गुणवंतनो, ते श्रावक सुविशेष.

५. कुड कपट वर्जे सदा, करे नहीं तेम क्लेश;
मुख मधुर हृदये सरळ, ते श्रावक सुविशेष.

६. कद्र करे ज्ञानी तणी, ज्ञानी रुप अशेष;
ज्ञानी जनना दास जे, ते श्रावक सुविशेष.

७. पुस्तक तणी प्रभावना, चित्त चाहे हंमेश;
योग्य समये ते आदरे, ते श्रावक सुविशेष.

८. सहु साथे शुभ मित्रता, अंश न मनमां द्वेष;
कहे मुनि जयचंद्रजी, ते श्रावक सुविशेष.

पाठ ५ मो.

(श्रावकना २१ गुणविषे.)

१. जेनी दृष्टि (अंतरभाव) निर्मल होय तेने श्रावक कहीए.

२. हररोज पर उपकार करे तेने श्रावक कहीए.

३. ठगाइ करी पैसो कमाय नहीं तेने श्रावक कहीए.

४. दीलमां झाझो क्रोध करे नहीं तेने श्रावक कहीए.

५. ज्ञान अने ज्ञानी उपर प्रीति राखे तेने श्रावक कहीए.

६. बराबर सत्य वचन बोले तेने श्रावक कहीए.

७. घेर आवेल मनुष्यनो उचित सत्कार करे तेने श्रावक कहीए.

८. लसण डुंगली विगेरे तेमज अफीण भांग गांजो विगेरे अभक्ष्य पदार्थनो त्याग करे तेने श्रावक कहीए.

९. कोइना छीद्र जुवे नहीं तेने श्रावक कहीए.

१०. गुणीजननां वखाण करे तेने श्रावक कहीए.

११. गुणग्राही होय तेने श्रावक कहीए एटले कोइमां क्रोड अवगुण होय ने मात्र एकाद गुण होय तो ते

गुणनी प्रशंसा करे पण अवगुण बोले नहीं तेने श्रावक कहीए.

१२. सदाय ज्ञाननो अभीलाषी होय, ज्ञानीजन मळये धर्मना प्रश्नो पुछवानी जिज्ञासा राखे तेने श्रावक कहीए.

१३. श्रावकनो १/१० भाग; तेम नही तो १/१०० भाग पण ज्ञानादि शुभ खाते खर्चे तेने श्रावक कहीए.

१४. शरीर, स्त्री, पुत्र, धन, गृह विगेरेने स्वप्नवत् जाणे तेने श्रावक कहीए.

१५. वाशी अन्न अने रात्रिभोजन न जमे तेने श्रावक कहीए.

१६. देशनो उद्धार करे अगर शक्ति मुजब एकाद मनुष्यनो पण उद्धार करे तेने श्रावक कहीए.

१७. देखादेखीथी निंदा न करे तेने श्रावक कहीए.

१८. वस्तुनो विचार करीने बोले तेने श्रावक कहीए.

१९. कुबुद्धिथी कोई मनुष्यने दुःख थाय एवुं काम न करे तेने श्रावक कहीए.

२०. साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका ए चतुर्विध संघनी सेवा करे तेने श्रावक कहीए.

२१. मुनिने बहु मानथी वोरावीने जमे—जो जोगवाइ न होय तो भावना भावीने जमे तेने श्रावक कहीए.

पाठ ६ ठो.

(प्रातः कृत्य विषे.)

१. सवारे उठीने देव गुरुनुं स्मरण करवुं.
२. गत दीवसे कोई पाप दोष लागेल होय तेनी आलोचना करी लेवी.
३. हवेथी कोई दोषो न करवानी प्रतिज्ञा लेवी.
४. शरीर, स्त्री, पुत्र, धन, गृह विगेरे अनित्य छे एवी भावना भाववी.
५. नासिकामांथी जे बाजुनो पवन निकळतो होय ते बाजुनो (ते तरफनो) पग प्रथम हेठे मूकवो.
६. नवकार मंत्र ५ वार गणवा.
७. उच्च भावना भाववी.
८. कोई पण कार्यनी चिंतवना द्रढ संकल्पपूर्वक करवी.
९. नवकारसी, पहोरसी विगेरेनुं प्रत्याख्यान करवुं.
१०. कोई पण प्रकारनो उत्तम नियम लेवो.

पाठ ७ मो.

(स्नान विषे)

१. जीव जंतु न मरे तेवी जग्याए स्नान करवुं.
२. प्रथम मस्तकपर जल रेडी पछी स्नान करवुं.
३. स्नाननुं पाणी शीत उष्ण तेम सुगंधवाळुं होवुं जोईए.

४. कोई न देखे तेवे स्थळे स्नान करवुं.
५. भोजन कर्या पहेला स्नान करवुं.

पाठ ८ मो.

(कसरत विषे)

१. कसरत करवाथी आळस-प्रमाद विगेरे दूर थाय छे.
२. शरीरमां शक्ति तेमज उत्साह वधे छे.
३. कोई पण नवा रोगो उत्पन्न थता नथी.
४. थयेल रोगो मटे छे.
५. जींदगी सुखरूप नीवडे छे.

कसरतनां मुख्य १० प्रकारनां आसनो निचे मुजब.

१. सिद्धासन :—साधारण रीते पग उपर पग चडावी एक स्थिरताथी बेसवुं. लाभ—छातिना तमाम रोगो मटे छे

२. बद्धपद्मासन :—पग उपर पग चडावी पाछलथी बे हाथ वडे पगना बे अंगुठा पकडवा. लाभ—पेटना दर्दो जेवा के बादी, अरुची, अजीर्ण, विगेरे दुर थाय छे.

३. मयूरासन :—बे हाथ वचमां नांखी उंचुं थवुं. लाभ—अंडवृद्धि विगेरे दुषणना रोगो मटे छे.

४. धनुषासन :—एक पग लांबो करी बीजो पग वाळी

एक हाथथी पगनो अंगुठो कान सुधी लाववो. लाभ–वायुना रोगो मटे छे.

५. उत्तानासन :–बे पग लांबा करी ढींचणने न वळवा देता बे हाथे बे पगना अंगुठा पकडी मस्तक ने बे ढीचण वच्चे लाववुं. लाभ–पिचोटी खसती नथी, पगे कळतर थती नथी विगेरे.

६. जिव्हासन :–जीभने बहार काढी नाकनी अणीए अडकाडवुं. लाभ–बोबडापणुं मटे छे.

७. नेत्रासन :–नासिकाना अग्रभागे दृष्टि ठेरववी (पलकारा मारवा नहीं)थोडीवारे चक्षुमांथी पाणी झरशे. लाभ–नेत्रनी तमाम व्याधिओ दूर थशे:–फुलु, मोतिओ, पांडुरोग, झामरवा वळी विशेषमां कोई दिवस चश्मा पहेरवानी जरूर रहेशे नहीं.

८. आयतनासन :–एक पगवाळी पांशाभेर सुवुं. लाभ–वीर्य जता अटकशे एथी अनंत फायदो थशे.

९. गरुडासन :–उभा थई एक पगवाळी एडी सुधी लाववुं अने हाथनो मरोड करवो. लाभ–स्थीरता थशे चक्री मटशे.

१०. गौदुहासन :–गायने दोती वखते जे रीते बेसाय छे ते रीते बेसवुं परंतु वधारामां ए के नेत्रोने मींची राखवां. लाभ–मननी एकाग्रता थशे.

(आ आसने भगवान् महावीरने कैवल्यज्ञान थयुं हतुं)

एक महा कसरत.

१. कइंपण आधार वगर मात्र एक पगेज उभु थवुं. लाभ–शरीरमां मेद वधतो नथी, अशक्ति मटे छे, देह समधारण रहे छे के जेने शास्त्रमां 'अगुरुलघु' कहे छे.

पाठ ९ मो.

(जिनमंदिरे जइ भावना भाववा विषे.)

१. जिन मंदिरे जइ चैत्य वंदन करवुं.
२. प्रभुनी पूजा करवी.
३. एकाग्रताए ध्यान करवुं.
४. मंदिरनी शोभा केवी छे? कई कई चीज सारी छे! कोरणी केवी छे! ए विगेरे उपर ध्यान न देतां प्रभुना गुणनी चिंतवना करवी.
५. हे आत्मन्! तुं रागद्वेष रहित क्यारे थईश.

एम भावना भावता निचे मुजब बोलवुं.

दोहरा.

१. जय जय गुणसिंधु प्रभु! जय जय तुं अविकार;
जयकारण जगतीतले, लीधो प्रभु अवतार.
२. महिमा मोटो ताहरो, कहेता नावे पार;
पण मुज भक्ति भावथी, लेजो सर्व स्वीकार.

३. वर अतिशय चोत्रीस छे, पांत्रीस वाणी सार;
द्वादश गुण संयुक्त छो, वर्जीत दोष अढार.

४. अष्ट कर्म रूप वैरिने, हे जिन जितण हार;
वंदन करुंछुं भावथी, तुजने वारंवार.

५. दीन सेवकनी उपरे, नेह निघा करनार;
जयमुनि कहे प्रभुजने, उतारो भव पार.

पाठ १० मो.

(सद्गुरुनी सेवा विषे.)

१. उपाश्रये जई सद्गुरुने ३ वार वंदन करवुं.

२. एक चित्तथी तेमनुं व्याख्यान सांभळवुं.

३. पछीथी ज्ञाननो सामजुती लेवा माटे अनेक प्रश्नो पुछवा.

४. सद्गुरुनी आज्ञा मस्तके चढाववी.

५. सद्गुरु तेमज बीजा कोईना पण अवगुण जोवा करता पोतामां कया कया अवगुणो छे? ते जोइ तेने निवारवाना प्रयत्नो करवा.

६. देव गुरु अने धर्म ए ३ तत्त्वनी आराधना करवी.

७. सद्गुरु, माता, पिता, ए ३ नो सदा विश्वास करवो.

८. विष, वेश्या, नदी, नाग, स्त्री, अग्नि, राजा, अने

ढाञ्ची हा करनार एटले एकांत मीठुं बोलनार आ
८ नो कोइ दिवस पण विश्वास करवो नहीं.

९. ज्ञानी जनने गुरु मानवा.

१०. अज्ञानीने गुरु मानवाथी बन्ने भव बगडे छे.

पाठ ११ मो.

(सामायिक विषे.)

१. सामायिकनो वखत ४८ मिनिटनो छे.

२. बत्रीश दोप टालीने सामायिक थाय छे.

३. ओगणिश दोप टालीने कार्योत्सर्ग थाय छे.

४. ओगणत्रीश दोष टाळवाने माटे कार्योत्सर्ग थायछे तेनां नाम १८ पाप, ८ कर्म, ३ शल्य (कपट, कोइ वस्तुनो मांगणी, मिथ्या समत्त्व.)

५. सामायिकमां क्रोध क्लेश वैर झेर थाय नहीं.

६. सामायिकमां गृहसंबंधी तेमज देश देशांतर संबंधी वात विगेरे थाय नहीं.

७. सामायिकमां निद्रा लेवाय नहीं.

८. सामायिकमां मन वचन अने काया ए त्रणे स्थिर राखवा.

९. सामायिकमां कोइना उपर खोटी दृष्टि थाय नहीं, तेमज वगर विचारे बोलाय नहीं.

१०. सामायिक हंमेश करवानो रीवाज राखवो.

पाठ १२ मो.

(सामायिक विषे कविता.)

[वीर जिनेश्वर देशना—ए राग.]

१. करो सामायिक भावथुं, दोय घडि शुभ ध्यान-लालरे;
सुरगति शिवगति पामशो, भाषे श्रीभगवान-लालरे.क०
२. निद्रा विकथा परिहरी, षट्भागे पच्चखाण—लालरे;
मन वच काया गोपवो, जो चाहो कल्याण—लालरे क०
३. लाख सोनैया महोरथी, कींमत अधिक अनंत—लालरे;
श्री श्रेणिक नृप आगले, बोल्या श्रीभगवंत-लालरे. क०
४. जो कोइ क्लेश उदिरणा, करे सामायिक मांय—लालरे;
तो सामायिक दूरे जशे, लाभ न थाये कांय-लालरे क०
५. एकवार एकज चित्तथी, करो सामायिक शुद्ध-लालरे;
न्याल थशो निश्चयपणे, कहे जयमुनि विबुद्ध—लालरे.क०

पाठ १३ मो.

(सामायिकना प्रश्नोत्तर विषे.)

१. प्रश्नः—कायोत्सर्गना केटला दोष ?
उत्तर—ओगणीस.
२. प्रश्नः—केटला दोष निवारवा माटे कायोत्सर्ग करवो.
उत्तर—ओगणत्रीश.
३. प्रश्नः—आचार्यना गुण केटला ?

उत्तर–छत्रीश. (छत्रीश गुण छत्रीश प्रकारे कुल १२९६)

४. प्रश्नः–इरियावहिना मिच्छामिदुक्कडं केटला?
उत्तर– अढार लाख चोविश हजार एकसो ने वीस. (१८२४१२०)

५. प्रश्नः–नवकारवाली (माला)मां पारा (मणका) केटला होय छे?
उत्तर– एकसो आठ. (१०८)

६. प्रश्नः–तेनुं कारण शुं ?
उत्तर–पंच परमेष्ठीना सर्वे थइ १०८ गुण थायछे तेनी सूचना रहेवामाटे तेटला पारा राखेला छे.

७. प्रश्नः– कायोत्सर्गमां आगार केटला?
उत्तर– १२ अथवा १६.

८. प्रश्नः– जैनधर्मना तीर्थंकर केटला ?
उत्तर–चोवीश.

९. प्रश्नः–चोवीशे तीर्थंकरोनां नाम कया पाठमां आवेछे?
उत्तर–लोगस्समां.

१०. प्रश्नः–लोगस्सनुं खरुं नाम शुं ?
उत्तर–चतुर्विंशति जिनस्तुति.

११. प्रश्नः– सामायिकनुं प्रत्याख्यान केटला भांगाए थाय छे?

उत्तर– छ भांगाए.

१२. प्रश्नः– सामायिकमां कोइनी निंदा करे तो शुं थाय? सामायिकनो लाभ मळे नहीं.

१३. प्रश्नः-सामायिकनो लाभ शो?

उत्तर–मूख्य मोक्षपद, बाकी स्वर्गसुख.

१४ प्रश्नः– मन आडु अवळु जाय तो सामायिक थइ कहेवाय के केम?

उत्तर–ना, न थई कहेवाय.

१५. प्रश्नः–मन स्थिर राखवा माटे शुं करवुं?

उत्तर–नाकनो पवन रोकी ॐ सोहंनुं ध्यान करवुं.

१६. प्रश्नः–ते न बने तो सामायिकनो वखत शी रीते गाळवो?

उत्तर–सद्गुरुनी पगचंपी करवी [illegible] माळा गणवी, सज्झाय स्तवन भणवुं. [illegible] पुस्तको वांचवां. सद्गुरुने धर्मना सवाल पुछवा. [illegible].

पाठ १४ मो.

(प्रतिक्रमण विषे.)

१. दिवस तेमज रात्रिना पापदोषो निवारवामाटे प्रतिक्रमण करवुं.

२. प्रतिक्रमणमां खमाव्या पछी कोइ साथे वैर विरोध राखी शकाय नहीं.
३. नाना बाळकनी माफक शुद्ध हृदय राखी प्रतिक्रमण करवुं.
४. वंदिता सूत्रमां कहेल अतिचारो चिंतववा.
५. एकाग्र चित्तथी पापनी आलोचना (विचारणा) पूर्वक प्रतिक्रमण करवुं
६. प्रतिक्रमणमां ओठींगण देवाय नहीं.
७. प्रतिक्रमण धीरेधीरे अने स्पष्ट उच्चारथी शुद्ध बोलवुं, अशुद्ध बोलवाथी उलटु पाप लागे छे.
८. थयेल पापोनी प्रभुपासे अंतःकरणथी माफी मांगवी.
९. तेवां पापो फरीथी न करवानी प्रतिज्ञा लेवी.
१०. अवगुणी उपर द्वेष न करवो, गुणीनुं बहुमान करवुं.

पाठ १५ मो.

(प्रतिक्रमण विषे कविता.)

[जिनवर प्रणमुं हो राज—ए राग.]

१. प्रतिक्रमण शुद्ध भावधरोने, करो नरनारी सर्वे;
पाप पखालण गुण उजालण, थइ अंतर्निगर्वे.
संघे कर मन रंगे हो राज पडिक्कमणु मन चंगे.

२. ज्ञान दर्शन चारित्र त्रीजे, तप वीर्य ए पांचे;
अतिचार एहना आलवता. आचार मनसाचे. सं०

३. संका कंखा दोष निवारो, बंध वध तेम प्राणी;
जुठी साक्षी मायाभोषो, ज्ञान अदत्ता हाणी. सं०

४. विधवा वेश्या तेम परनारो, काम जगावण चीज;
महामोहनुं स्थानक वर्जो, धर्म तणुं ए बीज. सं०

५. धनधान्य ने हिरा माणेक, माप करो तमे तेना;
देशदेशांतर खावुं पीवुं, वळि व्यापारज एना. सं०

६. अनर्थदंड निवारो आठे, सामायिक मन धारो;
दिशावगाशिक पौषधरूडो, व्रत आचरजो सारो. सं०

७. जमवा वखते जमवा बेसो, त्यारे मुनि चिंतवजो;
संलेषणना दोष निवारी, सुकृत भंडार भरजो. सं०

८. आवश्यक करता ध्यानज धरता, अनुसरता जिन वाणी;
जयमुनि कहे एम आगम सुणता, पामे शिवपद प्राणी. सं०

पाठ १६ मो.

(प्रतिक्रमणना प्रश्नोत्तर विषे.)

१. प्रश्न:- उपरनी कवितामां 'संघे' शब्द आव्यो तेनो अर्थ शो ?

उत्तर—संधे एटले दिवस ने रात्रीनी संध्या, प्रतिक्रमण दिवस ने रात्रीनी संध्या वखते थाय माटे 'संधे' शब्द मुकेल छे.

२. प्रश्न :—आवश्यक नो अर्थ शो? अने ते केटला ?

उत्तर—आवश्यक एटले अवश्य करवा योग्य क्रिया. अने ते छ (६).

३. प्रश्न :—ते छए आवश्यकनां नाम कहो.

उत्तर—१ सामायिक. २ चतुर्विंशति स्तव. ३ वंदन. ४ प्रतिक्रमण. ५ कायोत्सर्ग. ६ प्रत्याख्यान.

४. प्रश्नः—प्रतिक्रमण केटला ? अने ते कया कया ?

उत्तर—पांच (५). १ देवसी. २ राई. ३ पाक्षिक. ४ चातुर्मासिक. ५ सांवत्सरिक.

५. प्रश्नः—भवनुं तेमज भवांतरनुं ए बे मेलवी कोई सात प्रतिक्रमण कहे छे तेनुं केम ?

उत्तर—भवनुं प्रतिक्रमण ते अंतीम संलेषणा अने भवांतरनुं ते सम्यक्त्व एम समजवुं परंतु ते बेने प्रतिक्रमण ए संबोधनथी कथेल नथी कारण के "वारंवार कराय तेने प्रतिक्रमण कहेवाय" एम पूर्वाचार्यनी रूढी जणाय छे अने ते आपणे मान्य राखवुं जोईए.

६. प्रश्नः—प्रतिक्रमण शामाटे करवुं ?

उत्तर–दिवसमां के रात्रीमां थयेल पापदोषनी माफी
मागवा माटे.

७. प्रश्नः–पाप केटला ?
उत्तर–अढार (१८). हिंसा, मृषा, विगेरे.

८. प्रश्नः–दोष केटला प्रकारना ?
उत्तर–चार प्रकारना. १ अतिक्रम. २ व्यतिक्रम. ३ अतिचार. ४ अनाचार.

९. प्रश्नः–कृपा करी ए चारेना अर्थ कहेशो ?
उत्तर–अतिक्रम एटले मननो दोष. व्यतिक्रम एटले तेनाथी वधारे दोष. अतिचार एटले तेथीए पण वधारे दोष. अनाचार एटले सर्वथा दोष. स्पष्ट एम छे के अतिक्रम ४ आनी दोष. व्यतिक्रम ८ आनी दोष. अतिचार १२ आनी दोष. अनाचार १६ आनी एटले संपूर्ण दोष.

१०. प्रश्नः–हे भगवन् कोई दृष्टांतथी समजाववा कृपा करशो ?
उत्तर–जेम कोई पुरुषे मांसनुं प्रत्याख्यान कर्युं. हवे तेने ते खावानी इच्छा थई–त्यारे तेने दोष लाग्यो ते अतिक्रम दोष कहेवाय. [illegible] मांस लेवा जाय ते व्यतिक्रम दोष. हाथे लेई मुखसुधी लावे ते अतिचार दोष. अने मुखमां

मूके ते अनाचार दोष. ए प्रमाणे दरेक बाबतमां समजवुं.

११. प्रश्नः—उपधानवाला श्रावकने काचु पाणी पीनारनुं प्रतिक्रमण खपे के केम?

उत्तर—खपे,—केमके तेमां कांइ दोष नथी.

पाठ १७ मो.

(नवतत्त्व विषे.)

१. दरेक श्रावके नवतत्त्वनुं जाणपणुं करवुं जोईए.

२. नवतत्त्वनां नाम :—१ जीव. २ अजीव. ३ पुण्य. ४ पाप. ५ आस्रव. ६ संवर. ७ निर्जरा. ८ बंध. ९ मोक्ष.

३. जीव अने अजीव ए बेमां नवेनो समावेश थाय छे परंतु अल्पज्ञने विशेष जणाववामाटे नव गणेल छे.

४. जीव एटले चैतन्यशक्तिवालु प्राणी.

५. जीवना भेद (१४) अने विस्तारथी (५६३)

६. अजीव एटले जड.

७. अजीवना भेद (१४) अने विस्तारथी (५६०)

८. पुण्य एटले कोईने अन्न पाणी वस्त्र विगेरे देवाथी जे लाभ थाय ते, अगर दुःखीनुं दुःख नीवारण करवुं विगेरे परोपकारिक कार्यो करवाथी जे लाभ थाय ते.

९. पुण्य थवाना प्रकार (९) तेना शुभ फलना प्रकार (४२).

१०. पाप एटले परजीवने दुःख देवुं तेमज नठारो विचार करवो ते.

११. पाप थवाना प्रकार (१८) तेना अशुभ फलना प्रकार (८२)

१२. आश्रव एटले कर्म आववानो मार्ग.

१३. आश्रवना मार्ग (२०) तेमज (४२)

१४. संवर एटले कर्म आववाना मार्गो बंध कराय ते.

१५. संवरना प्रकार (२०) तेमज (५७)

१६. निर्जरा एटले कर्मनुं झरवुं.

१७. निर्जराना प्रकार (१२).

१८. बंध एटले कर्मनुं बंधावुं.

१९. बंधना प्रकार (४).

२०. मोक्ष एटले सकल कर्मथी छुटवुं.

२१. मोक्षना द्वार (९) सिद्ध थवाना प्रकार (१५)

२२. जैनना तत्त्वज्ञाननो समावेश नवतत्त्वमां थाय छे.

२३. नवतत्त्वनुं जाणपणुं करवाथी आत्मानो मुक्ति थाय छे.

२४. मोक्ष—ज्ञान दर्शन अने चारित्रथी मळे छे.

२५. अने ते ज्ञान दर्शन चारित्र त्रणे अभिन्न एक स्वरूपे छे.

२६. ज्ञान अने क्रियामां ज्ञानने मूख्य मानवुं. ज्ञान सर्व आराधिक अने क्रियादेश आराधिक एम श्रीभगवती सूत्रमां कहेल छे.

पाठ १८ मो.

(नवतत्त्व विषे कविता.)

[गोरस ल्यो गोरस ल्यो—ए राग.]

१. ज्ञानभणो ज्ञानभणो, हांरे तमे जीवने शीद हणो; ज्ञा०

२. ज्ञानी जगमां सुख पामे, ज्ञानीनो यश बहु जामे;
निधि नवे ज्ञानी नामे—ज्ञा०

३. हारे जे ज्ञान भणे भावे, वलि जे पुस्तक वहोरावे;
ज्ञानी तेहना गुण गावे—ज्ञा०

४. ज्ञानावर्णीय कर्म तणो, ते नर क्षय करे घणो;
मार्ग पामे शिवपुरनो—ज्ञा०

५. क्रोड वर्षे जे अज्ञानी, करे कर्म तणी हाणी;
पळमां ते करशे ज्ञानी—ज्ञा०

६. प्रथम ज्ञान ने पछी दया, ज्ञानविन नहीं छे रे दया;
ज्ञानवडे जिन चक्री थया—ज्ञा०

७. ज्ञान वीनाशी क्रिया करशो, भण्याविना तमे केम लखशो;
ज्ञानवीना नहीं भव तरशो–ज्ञा०

८. ज्ञान ते नवतत्त्व जाणो, समकीत ते श्रद्धा आणो;
जयचंद्र पछी निर्वाणो–ज्ञा०

पाठ १९ मो.

(नवतत्त्वनां प्रश्नोत्तर विषे.)

१. प्रश्नः–शरीरमां जीव छे तेनी खात्री शी ?
उत्तर–चुंटीओ भरवाथी दुःख थाय छे अने चंदन–
विलेपन करवाथी सुख थाय छे ते.

२. प्रश्नः–वनस्पति विगेरेमां जीव छे तेनी खात्री शी ?
उत्तर–वृद्धि पामे छे (वधे छे) ते.

३. प्रश्नः–अजीवनी खात्री शी ?
उत्तर–वृद्धि पामतुं नथी ते.

४. प्रश्नः–पुण्यनी खात्री शी ?
उत्तर–काईने मधुर (मीठा) वचनथी बोलावो पछी
ते तमने सुखकर वचन कहेशे ते.

५. प्रश्नः–पापनी खात्री शी ?
उत्तर–चोरी तेम व्यभिचार कर्येथी दुःख मलेछे ते.

६. प्रश्नः–आश्रवनी खात्री शी ?
उत्तर–पुण्य पाप उपरथी.

७. प्रश्नः—संवरनी खात्री शी ?

उत्तर—पुण्य पाप न लागे ते उपरथी.

८. प्रश्नः—निर्जरानी खात्री शी ?

उत्तर—दाखला तरीके,—तमने धन जोइतुं होय ने ते न मलतुं होय तो अंतराय कर्म छे एम समजो— हवे ते कर्मनी निर्जरा करवामाटे वनमां जई मात्र एकज कलाक एकाग्रताथी शुभ ध्यान धरो पछी धन मले छे के नहीं? मल्येथी जाणजो के अंतराय कर्मनी निर्जरा थई. विगेरे

९. प्रश्नः—बंधनी खात्री शी ?

उत्तर—थोडा वधारे कर्म उपरथी.

१०. प्रश्नः—मोक्षनी खात्री शी ?

उत्तर—विराग दशा उपरथी.

११. प्रश्नः—नवतत्त्वमां छांडवा योग्य केटला ?

उत्तर—त्रण;—पाप, आश्रव, बंध.

१२. प्रश्नः—नवतत्त्वमां आदरवा योग्य केटला ?

उत्तर—त्रण;—संवर, निर्जरा, मोक्ष.

१३. प्रश्नः—ज्यां सुधी मोक्ष न मले त्यां सुधी आदरवा योग्य कयुं तत्त्व.

उत्तर—पुण्य.

१४. प्रश्नः—नास्तिको कहे छे के पुण्यपाप नथी तेनुं केम?

उत्तर—नास्तिकोने पुच्छवुं के,—जन्मथी कोई अंध, कोई लुला, कोई श्रीमंत, कोई गरीब केम बने छे. कोईनो सखत उद्यम निष्फल जाय छे, कोईनो साधारण उद्यम पण फलीभुत थायछे तेनुं कारण शुं? आवा अनेक सवालोनो उत्तर तेओ यथा तथ्य आपी शकशे नहीं एथीज खात्री थशे के तेओनुं नास्तिकपणुं खोटुं छे.

(जगत्‌मां पुण्य पाप छे तोज व्हेवार चाले छे.)

१५. प्रश्नः—नास्तिको कहे छे के जीव नथी तेनुं केम?

उत्तर—नास्तिकना शरीरने कापी जुवो के दुःख थाय छे के नहीं. शरीरमां सुख दुःखनो ज्ञाता (जानकार) जीव छे एज जीवनी खात्री छे.

१६. प्रश्नः—ममत्वभाव कोना उपरथी उतारवो?

उत्तर—अजीव उपरथी.

१७. प्रश्नः—नवतत्त्वमां लडाई केने केने थाय छे.

उत्तर—जीव अने अजीव ए बेने मांहोमांही लडाई थाय छे.

१८. प्रश्नः—ते लडाई थवानुं कारण शुं?

उत्तर—अजीवने जीव पोतानुं माने छे तेथी.

१९. प्रश्नः—कर्मनो क्षय केम थाय?

उत्तर—एकांतमां 'ध्यान' करवाथी.

२०. प्रश्नः—त्रण अमूल्य वाक्यो कया?

उत्तर—उपयोगे धर्म, क्रियाए कर्म, परिणामे बंध.

२१. प्रश्नः—त्रण सार (तत्त्व) रूप वस्तु कयी?

उत्तर—संयमनो सार उपशम(शांतिभाव), धननो सार धर्म, देहनो सार जीव.

२२. प्रश्नः—जीवना मूख्य प्रकार केटला?

उत्तर—बे,—त्रस, स्थावर.

२३. प्रश्नः—शरीर जीव के अजीव?

उत्तर—एकलुं शरीर अजीव, ज्यां सुधी जीव होय त्यां सुधी शरीरने जीव कहेवाय.

२४. प्रश्नः—जगतमां जीव केटला?

उत्तर—अनंता (गणता पार आवे नहीं).

२५. प्रश्नः—जीवने कोणे बनाव्या?

उत्तर—कोईए बनाव्या नथी—अनादिकालथी तेओ छे छे ने छे.

२६. प्रश्नः—कोई पण काले जीवनो अजीव या अजीवनो जीव थाय?

उत्तर—ना, न थाय.

२७. प्रश्नः—जीव, ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप,—ए पांचे एक छे के केम?

उत्तर—मूलरूपे पांचे एक छे. परंतु समजाववा माटे भिन्न भिन्न रूपे जीवना गुणो वर्णवेल छे.

२८. प्रश्नः–जीवना गुण केटला ?

उत्तर–अनंता.

२९. प्रश्नः–जीवनी सत्ता (शक्ति) केटली ?

उत्तर–अनंती छे.

३०. प्रश्नः–सर्वे जीवो निश्चयरूपे सरखा छे के न्यूनाधिक ?

उत्तर–निश्चयरूपे सरखा छे परंतु ओछा अधिका कर्मथी न्यूनाधिक छे.

३१. प्रश्नः–जीवने कर्मना फल कोण आपे छे ?

उत्तर–कर्म आपे छे जेमके,–अमृत अने झेर ए बन्ने जड छतां खानारने पोतपोतानुं फल आपेछे.

३२. प्रश्नः–कर्म-क्षय करवानो टुंकमां सरळ रस्तो बतावो.

उत्तर–ज्ञानी जननी शेवा करवी, ते कहे ते मुजब वर्त्तवुं, हठ (कदाग्रह) मुकवो, ज्ञान उपर प्रीति राखवी, ज्ञानना पुस्तको व्हेंचवा के जेथी तत्काल कर्मनो क्षय थशे–मोक्षनुं महा सुख मळशे.

पाठ २० मो.

(भोजनना नियम विषे.)

१. जेटली क्षुधा होय तेना $\frac{3}{4}$ भागे जमवुं.

२. आहारमां ½ भाग फलाहार होवो जोईए.
३. भोजन धीरे धीरे करवुं.
४. भोजन वखते क्रोध करवो नहीं.
५. भोजननी आदिमां खारुं पछी मीष्ट अने अंते तीखुं खावुं.
६. जम्या उपर जमवुं नहीं.
७. वाद करी वधारे जमवुं नहीं.
८. मनगमतुं भोजन पण वधारे जमवुं नहीं.
९. भोजनना मध्यमां पाणी पीवुं पण आगल पाछळ पीवुं नहीं.
१०. जमीने ओछामां ओछा १०० पगला धीरे धीरे फरवा.
११. सूर्य स्वरमां जमवुं.
१२. चंद्र स्वरमां पाणी पीवुं.
१३. पाणी गल्या वगर पीवुं नहीं.
१४. वासी अन्न-एठुं अन्न जमवुं नहीं.
१५. पारका भोजननी इच्छा करवी नहीं.
१६. सारो आहार एकलाए जमवुं नहीं.
१७. जमती वखत कोईपण ज्ञानी पुरुषने दान करीने जमवुं.

१८. ते न मळे तो कोईने पण थोडुं दान करीने जमवुं.
१९. रात्रे जमवुं नहीं.
२०. अजाण्युं फल, काचुं फल, सडी गयेल फल खावुं नहीं.
२१. मिष्ट पदार्थ उपर बहु प्रीति राखवी नहीं.
२२. भोजनमां बहु संतोष राखवो.
२३. दारु मांस, लसण, डुंगली, विगेरे वापरवा नहीं.
२४. बावीस जातिना अभक्ष्य तेमज बत्रीस जातिना अनंत काय खावा नहीं.
२५. चा, सोपारी, काफी विगेरेनुं व्यसन राखवुं नहीं.
२६. बीडी, होको, चलम विगेरे पीवां नहीं.
२७. गांजो, भांग विगेरे नीशाकारक पदार्थथी दूर रहेवुं.
२८. विरुद्ध पदार्थो भेगा करी खावा नही जेवाके दुध ने मध, दही ने गोल, मध ने घी, विगेरे.
२९. जम्यापछी ओछामां ओछा त्रण कलाके जमवुं.
३०. अजीर्ण जणाय तो प्रातःकाले उष्ण पाणी पीवुं.
३१. पन्नर दिवसमां ओछामां ओछो १ उपवास करवो.
३२. भोजन करीने तरत सुइ रहेवुं नही.

पाठ २१ मो.

(आरोग्यताना नियम विषे.)

१. दिवसे निद्रा लेवी नहि.
२. दिवसे मैथुन करवुं नहि.
३. दिवसमां एक कलाक कसरत करवी.
४. जन्मथी २५ वर्षतक शुद्ध ब्रह्मचर्य पालवुं.
५. वर्ष २६ थी ५० सुधी नीतिपूर्वक गृहस्थाश्रम साचववा.
६. वर्ष ५१ थी अंतीम सुधी वनमां रहेवुं.
७. परस्त्रीनो विचार मनथी पण करशो नहिं.
८. हस्तमैथुन विगेरे कदीपण भूलेचूके पण करशो नहि.
१०. सोवार स्वस्त्रीनी साथे मैथुन सेववाथी जेटलो बलनो क्षय थाय छे तेटलो बलक्षय एकवार परस्त्रीने सेववाथी थाय छे.
११. सोवार परस्त्रीनो साथे मैथुन सेववाथी जेटलो बळनो क्षय थाय छे तेटलो बळक्षय एकवार हस्तमैथुन करवाथी थाय छे.
१२. मैथुनकार्य करता मैथुननो विचार महाभयंकर छे.
१३. पवित्र विचार ए ज आरोग्यतानो मूख्य पायो छे.
१४. शरीर, अन्न, पाणी, मकान--आ ५ तद्दन स्वच्छ राखवा.

१५. जेओ सरसामान सुघडताई पूर्वक राखे छे तेओनुं मन पण स्वच्छ रहेछे एम समजवुं.

१६. प्रातःकाले घीथी तलीने हरडे खाता रहेवुं.

१७. 'चा' पीवी नही. चा महा नुकसानकारी चीज छे.

१८. चाने बदले दुध मन मानतुं पीवुं.

१९. छींकणो (बजर) सुंघवानी टेव राखवी नहिं.

२०. कोई पण वस्तु पारका पाशे मांगवानी टेव राखवी नहीं.

२१. कोई पण वस्तु मफत लेवानी इच्छा राखवी नहि.

२२. दुध, फल, ब्रह्मचर्य, सत्यवचन, ज्ञानी गुरुनी सेवा आ पांच अमूल्य वस्तुओ छे माटे खरी जीगरथी तेओनो अंगीकार करवो.

२३. 'स्त्री' शरीरनो सत्यानाश करनार पदार्थ छे माटे जेम बने तेम तेनाथी दूर रहेवुं.

२४. चोरीनो विचार, गुस्सो, अहंकार, कपट, निर्दयपणुं आ पांच वस्तुओनो त्याग करवो.

२५. क्रोध चडेतो तरत नवटांक ठंडु पाणी पीवुं.

पाठ २२ मो.

(अगम चेती विषे.)

१. जेवी बुद्धि उपजे तेवुं सुख दुःख मळशे एम समजवुं.

२. जेओ सदगुरुनुं वचन स्वीकारे छे तेओनी चडती दशा छे एम समजवुं

३. जेओ तद्दन मीठुं बोले छे तेओ गळुं कापनार छे एम समजवुं.

४. प्रथम समागमे संतोष उपजेतो तेओथी कार्यसिद्ध थशे एम समजवुं.

५. मळयेथी तरत विरुद्ध जणाय तो ते पूर्व भवनो वेरी छे एम समजवुं.

६. वगर कारण वैर विरुद्ध करे तेनी माठी दशा आवशे एम समजवुं.

७. जे पुरुष महादान करे छे ते आवते भवे राजा थशे एम समजवुं.

८. बहु लटपट करे ते पाको दूर्जन छे एम समजवुं.

९. बहु क्रोध करे तेनी आवर्दानो अंत आव्यो छे एम समजवुं.

१० प्रातःकाले जेवुं देखाय ते दिवस तेवो जशे एम नक्की समजवु.

पाठ २३ मो.

(विचार विषे)

१ विचार जेम बने तेम शुद्ध राखवो.

२ अशुभ विचारथी तीव्र कर्मनो बंध थाय छे तेमज आरोग्यताने नुकसान पहोंचे छे.

३ शुभ विचार पुष्प समान छे.

४ अशुभ विचार तरवारनी धार समान छे.

५ परदेशी विद्वानो विचारनो आकृत्ति कहे छे ते सांभळी आपणा श्रावको विस्मय पामे छे. परंतु आपणा तीर्थंकर भगवानोए सिद्धांतोमां स्पष्ट कहेलुं छे के विचारना ६ प्रकार छे अने तेओनी विविध आकृतीओ रूप--रंग विगेरे छे.

६ जैन शास्त्रमां विचारने ' लेश्या ' कहे छे.

७ शुभ लेश्याथी शुभ फल अशुभथी अशुभ फल थाय छे.

८ छ महिना सुधीनो शुद्ध विचार दरेक कार्य करी शके छे.

९ छ महीना सुधीनो अशुद्ध विचार दरेक कार्यनी हानी करे छे.

१० वचन अने कायानो मुख्य आधार विचार उपर छे.

११ तमे जेवा विचार करशो तेवा थशो.

१२ पूर्ण विचार करी कार्य आदरवाथी सिद्ध थाय छे.

१३ विचार वगरनुं कार्य निष्फल जाय छे.

१४ शुद्ध विचारथीज कैवल्य ज्ञाननो उत्पत्ति थाय छे मरुदेवी भरतचक्रीवत्.

१५ शुद्ध विचारथीज वैरी सज्जन थाय छे.

१६ विचारनी प्रतिभा पड्येथी मनुष्य स्हामो मनुष्य पोताने वश्य थाय छे.

पाठ २४ मो.

(वाणी विषे.)

१ सत्य तेमज प्रीय वचन बोलवुं,

२ आपेलुं वचन प्रतिज्ञापूर्वक पालवुं.

३ कोईनुं नाम बगाडीने बोलाववुं नहिं जेमके धर्मचंद्रने धमो हीराचंद्रने हीरो विगेरे.

४ छोकराने पण भाइ कहीने बोलाववो के जेथी ते पण तेवुं बोलता सीखे.

५ कोइने खोटी शिक्षा (शीखामण) आपवी नहिं.

६ कोईने गाळ देवी नहिं.

७ कोइनुं अपमान करवुं नहिं.
८ कोइनी निंद्या करवी नहिं.
९ कोइनी चाडी खावी नहिं.
१० क्रोध चडे तो पण दुष्ट वचन, असत्य वचन, अप्रिय वचन, वगर विचार्युं वचन, राड पाडीने विरुद्ध वचन बोलवा नहिं.
११ हाजी, कहेशोजी, फरमावोजी, पधारोजी, ए विगेरे सभ्य वचनो बोलवानी आदत पाडवी.
१२ उद्धताइथी कोइने तरछोडवो नहिं.
१३ बे जणनी वातमां वगर बोलाव्ये बोलवुं नहिं,
१४ समज्या वगर बोलवुं नहिं.
१५ हेतु कारण तपाश्या वगर अटकलना फांटीआथी बोलवुं नहिं.
१६ बहु बोलवुं नहिं.
१७ नकामुं बोलवुं नहिं.

पाठ २५ मो.

(काया विषे.)

१ हाथेथी कोइने धोल मारवी नहिं.
२ पगेथी कोईने ठेश मारवी नही.

३ हाथनी आंगुली वगर कारणे मुखमां नाखवी नहिं.
४ दांतथी हाथना नख करडवा नहिं.
५ हाथथी तणखला तोडवा विगेरेनुं नकामुं काम करवुं नहिं.
६ गुणवंत पुरुषनी पगचंपी विगेरे सेवा करवी.
७ वगर कारणे ज्यां त्यां दोडवुं नहिं.
८ परस्त्री तरफ कुदृष्टी करवी नहिं.
९ कार्य वगर बहु उठ बेश करवी नहिं.
१० कोईनां चाळा पाडवा नहिं.
११ कोईनी मश्करी करवी नहिं, तेमज कोईने देखी मुख मरडवुं नहिं.
१२ घणीज सभ्यता पूर्वक बेसवुं.
१३ ज्ञानीपुरुष विगेरेना स्हामुं पग चढावीने बेसवुं नहिं.
१४ ज्वान वये ओढींगण दइ बेसवानी टेव राखवीं नहिं कारण के एम करवाथी वृद्धवये (घडपणमां) केड-तद्दन वली जाय छे.
१५ हाथ पगनां आंगलाथी कुचेष्टा करवी नहीं.
१६ चक्षुथी कुचेष्टा करबी नहीं.
१७ बलवंतनी साथे कुस्ती करवी नहीं.
१८ अजाण्या पाणीमां तरवुं नहीं.
१९ ठेकडा मारता चालवुं नहीं.

२० उंची दृष्टि राखीने चालवुं नहीं परंतु उंची दृष्टि एटले ऊच्च इच्छा राखवी.

२१ नीचे जोइ धीरे धीरे सभ्यता युक्त चालवानी पद्धति पाडवी.

२२ कायाथी जेम बने तेम परोपकारनां कार्यो करवा.

२३ परस्त्रीने छाती देवी नहीं.

२४ शत्रुने पीठ देवी नहीं.

२५ याचकने नाकारो देवो नहीं.

२६ धरती, भींत, चोपडी, विगेरे स्थले नकामु लखलख करवुं नहिं.

२७ पांचे इंद्रियो नियममां राखवी.

२८ क्षुधा, तृषा, शीत, ताप आ ४ शहन करवानी टेव पाडवी.

२९ स्वार्थी बनवुं नहिं.

३० खोटी शाक्षी पुरवी नहिं.

३१ चोरीनो माल राखवो नहिं.

३२ सारो माल देखाडी खोटो माल आपवो नहिं.

३३ ओछुं आपवुं नहिं, व्याजवी भाव कहेवो.

३४ भेल शेल करवुं नहिं.

३५ दाण चोरी करवी नहिं.

३६ कोईनो द्रोह करवो नहिं.

३७ कोईनुं बुरु इच्छवु नहिं, तेम करवुं नहिं.

३८ पारकानुं भलु करवाथी आपणुं भलु थाय छे.

३९ हमेश थोडु घणुं पण दान करवुं.

४० विद्याभ्याश तेम परोपकारना कार्यमां आलश राखवी नहिं.

पाठ २६ मो.

(पिता-मातानी सेवा करवा विषे.)

१ सवारमां उठी पिता माताने पगे लागवुं.

२ तेमनी आज्ञा मुजब वर्त्तवुं.

३ तेमने कदी तुच्छकारथी बोलाववा नहिं.

४ तेमना स्हामुं बे अदबदथी बोलवुं नहिं.

५ पोतानो हिसाब तेमनी आगल रजु करवो.

६ तेमने प्रथम भोजन करावीने पछी पोते जमवुं.

७ कदाच प्रथम जमवानो प्रसंग पडे तो तेमनी रजा लइने जमवुं.

८ तेओ कहे ते काम करवुं न कहे ते न करवुं.

९ तेओ गाल दीए तो शहन करवुं.

१० श्री सद्गुरु, पिता, माता ए ३ नी प्रशन्नता उपर प्रभुनी (कुदरतनी) प्रसन्नतानो आधार रहेल छे.

पाठ २७ मो.

(पुत्र–प्रत्ये पिता–मातानी फरज विषे.)

१ पुत्र अढार वर्षनो थाय एटले तेने अपमानथी बोलाववो नहिं तेना प्रत्ये क्रोध करवो नहिं.

२ आवकनो अर्धो भाग तेने सोंपवो.

३ पुत्रने वापरवा माटे महिने महीने पोतानी शक्ति मुजब ५–१० रुपीआ आपता रहेवुं.

४ पूर्ण योग्य होय तो तीजोरीनी कुंची तेने सोंपी पोते चिंत्या रहित थावुं.

५ सासुए वहु प्रत्ये स्नेहाळ नजरथी जोवुं.

६ घरमां कजीओ कंकाश करवो नहिं.

७ पुत्र पुत्रोने कदी रोवरावववा नहिं.

८ पै पैशो मांग्येथी वगर आनाकानीए आपी देवुं.

९ नाना बालेकोने घरेणा पहेरावववा नहिं.

१० नाना बालकोने रेसमी विगेरे बहु कीमती वस्त्रो पहेरावववा नहीं कारणके तेओ तेमां सुख मानता नथी अज्ञान पणाथी तेनी कदर नही करतां ज्यां त्यां भमी तेने बगाडे छे.

११ बालपणमां धर्मज्ञान अवश्य शीखवाडवुं.

१२ मोटा थये कुचाल शीखेतो मोढा मोढ न कहेता

पारका पासे कहेवरावबुं के जेथी आपणो मोभो सचवाय.

१३ बालकोने मीठा वचनथी बोलाववुं कारणके बालक प्रत्ये तमे जेवुं वर्त्तणुक करशो तेवुं आगल तमारा प्रत्ये ते वर्त्तणुंक करशे एम नक्की समजजो.

१४ बालकना शांभलता कदी अपशब्द बोलशो नहिं.

१५ बालकनौ निर्दोष रमतमां मंगाण पाडशो नहिं.

१६ बालकने देखता कोई प्रत्ये क्रोध करवो, स्त्रीने मोढथी बोलाववुं विगेरे कुरीवाज करशो नही. सुंदर स्वभाव उत्तम चाल चलगत राखजो कारण के— आगल उपर बालको तमारुंज अनुकरण करशे.

—⁂—

पाठ २८ मो.

(संप विषे.)

१ दरेक श्रावक श्राविकाए संपथी वर्त्तवुं.

२ एक बीजाए अभिमान करवुं नहिं.

३ नाना श्रावकोए मोटा श्रावकने पगे लागवु.
[आवात भगवती सूत्रमां कहेल छे.]

४ श्राविकाए श्रावकने पगे लागवु.
[आवात पण भगवती सूत्रमां कहेल छे.]

५ स्त्रीए पोताना पतिने तो अवश्य पगे लागवुं.

६ भाइ भाइमां कजीयो कंकाश नथाय तेम वर्त्तवु.
७ मित्र साथे कदी जुदाई राखवी नहीं.
८ आपद वखते मित्रने साह्यता करवी.
९ कोईने पण कटुक वचनथी बोलावबु नहिं.
१० गरीबने पण भाइ कहीने बोलाववुं के जेथी ते पण भाइ कहीने बोलावे.
११ जे घरमा सदा कुसंप रहे छे ते घरमा लक्ष्मी रहेती नथी.
१२ जे घरमा सदा संप रहे छे ते घर स्वर्गसमान दीपेछे.
१३ संपथी दरेक कार्य पार पडे छे.
१४ कुसंपथी कोइ पण कार्य सिद्ध थतुं नथी.
१५ हजारो कीडीओए संपथी हाथीने उगारेल छे.
१६ संप लक्ष्मीना संवादमां संप वधे छे.

पाठ २९ मो.

(जाणवा योग्य बीना विषे.)

१ गति ५ छेः—१ सिद्ध २ देव. ३ मनुष्य. ४ तिर्यंच. ५ नरक.
२ जाति ५ छेः—१ एकेन्द्रिय. २ द्वीन्द्रिय. ३ त्रींद्रिय. चतुर्रिंद्रिय. ५. पचेंद्रिय.

३ काय ६ छे:-१ पृथ्वी. २ पाणी. ३ अग्नि. ४ पवन. ५ वनस्पति. ६ त्रश.

४ लेश्या ६ छे (लेश्या एटले अंतरना भाव) :-१ कृष्ण. २ नील. ३ कापोत ४ तेजो. ५ पद्म. ६ शुक्ल.

(छए लेश्यानां लक्षण-दोहरा.)

१ पंचाश्रव शेवे घणुं, त्रण अगुप्ति जोय;
तीव्रारंभी शूद्रजे, कृष्ण प्रणामी होय.

२ कदाग्रह ईर्षा करे, कपटी लोभ अतीव;
मृषा बोले मुखथकी. नील प्रणामी जीव.

३ वक्र वक्रता आदरे, अति मायी गुण होण;
कापोत लेश्यी जाणीए. बोल्या एम प्रविण.

४ विनयवंत समताधरे, योग्य अने उपधान;
तेजो रति रंग छे, शुभ विचार प्रधान.

५ क्रोध मान माया अने, लोभ करेजे दूर;
पद्मलेश्याना लक्षणे, शांत चित्त तप शूर.

६ आर्त्त रौद्रने परिहरे, धर्म शुक्लने ध्याय.
विनय करे गुरु देवनो, लेश्या शुक्ल जणाय.

७ उत्तराध्यन चोत्रीशमे, लेश्या तणो विस्तार;
जयमुनि संक्षेपथी, कह्यो एम अधिकार.

१ कषाय ४ छे:-१ क्रोध. २. मान. ३ माया. ४ लोभ.

६ वेद (लिंग) ३ छे :-१ पुरुष. २ स्त्री. ३ नपुंसक.

७ इंद्रिय ५ छे :-१ कान २ चक्षु. ३ नाक. ४ जीभ ५ स्पर्श.

८ तत्त्व ३ छे. १ देव. २ गुरु. ३ धर्म.

९ आत्मा ३ छे. १ बहिरात्मा. २ अंतरात्मा ३ परमात्मा

१० शरीर ५ छे :-१ औदारिक २ वैक्रिय. ३ आहारिक. ४ तैजस्. ६ कार्मण.

पाठ ३० मो.

(कर्म विषे.)

१ कर्म ८ छे तेमा धनघाती एटले नीवड ४ छे,- १ ज्ञानावर्णिय. २ दर्शनावार्णिय. ३ मोहिनीय. ४ अंतराय. आ चार कर्म केवल ज्ञानने रोके छे. अघनधाती ४ छे,- १ वेदनीय. २ आयुष्. ३ नाम. ४ गोत्र.

२ ज्ञान तथा ज्ञानी पुरुषनी निंद्या करवाथी ज्ञानावर्णिय कर्म बंधाय छे तेथी तेना फल महादुःखदायक नीवडे छे ते नीचे मुजब परभवमां बुद्धि (अकल पामे नहीं याद शक्ति रहे नहिं, शरीरे खोड पामे, ज्यां जाय त्यां अपमान पामे, आखो दिवस मजुरी करे तो पण पेट पुरतुं अन्न पामे नहिं.

३ सम्यक्त्ववान् जीवनी निंद्या करे, ज्ञानीनी साथे वितंडा वाद करे ते जीव दर्शनावर्णिय कर्म बांधे छे,—फल :—परभवे समकीत तेमज चक्षु पामे नहिं, रतांधला थाय, मोतीया-फुला-पितपांडु विगेरे नेत्रना रोगो थाय.

४ कोई उपर क्रोध करे, डंश राखे, ईर्षा करे ते जीव मोहिनीय कर्म बांधे छे,—फल :—सर्प विंछी विगेरे झेरी जनावरनो अवतार पामी महादुःखी थाय छे.

५ जेओ अभिमान करे छे ज्ञानी पुरुषने पण नमता नथी तेओ परभवे झाडनो अवतार पामे छे, ताड—ताप—कोवाडाना घा विगेरे महादुःख सहन करेछे.

६ जेओ कपट करे छे तेओ उंट गधेडा पाडा विगेरेनो अवतार पामे छे.

७ जेओ लोभ राखे छे तेओ कुतरा बीलाडा उंदर विगेरेनो अवतार पामे छे.

८ जेओ परस्त्री भोगवेछे तेओ आवते भवे नपुंशक दूर्भागी या दरीद्र थाय छे.

९ जे स्त्री परपुरुषने भोगवे छे ते आवते भवे गुणीकानो अवतार पामी नरकमां जाय छे.

१० जे स्त्री कोई महापुरुष उपर पोतानी साथे व्यभिचार सेव्यानो आळ मूके छे ते आवते भवे बालरंडा थाय छे.

११ जेओ कारण वगर बहु हसे छे तेओ अंते रोवे छे.

१२ जेओ बहु शोचना (अपशोष–दीलगीरी) करे छे तेओ वनमां मृग थाय छे.

१३ जेओ पारकानी अवहेलना करे छे तेओ पोते अवहेलना पामे छे.

१४ जेओ दान देता अंतराय (विघ्न) करे छे तेओने धन मलतुं नथी.

१५ जेओ–अन्न पाणी वस्त्र मकान विगेरे कोई पण चीजनी अंतराय करे छे तेने ते चीज मळती नथी.

१६ जेओ पारकाने धन मळता अटकाव करे छे तेओ अनेक धंधा कर्ये पण धन पामता नथी.

१७ जेओ कोई जीवने सुख आपे छे तेओ परभवमां महा सुख शांति पामे छे.

१८ जेओ कोई जीवने दुःख आपे छे तेओ परभवमां महा दुःख पामे छे.

१९ जेओ मुनिनी सेवा करे छे, तप करे छे, सामायिक विगेरे धर्म क्रिया करे छे, तेओ देवगतिनुं आयुष् बांधे छे.

२० जेओ सरलपणाम राखे छे, बहु वखत क्रोध राखता नथी. कोईनी इर्षा करता नथी, तेओ मनुष्यनुं आयुष् बांधे छे.

२१ जेओ कपट करे छे, वक्रबुद्धि राखे छे, तेओ तिर्यचनुं आयुष् बांधे छे.

२२ पुरुष कपट करे तो स्त्री थाय छे.

२३ स्त्री कपट करे तो नपुंसक थाय छे.

२४ नपुंसक कपट करे तो उंट पाडा गधेडा बकरा भुंड विगेरे थाय छे.

२५ जेओ पचेंद्रिय जीवनी हिंसा करे छे, हिंसामां तीव्र परिणाम राखे छे, अंत सुधी क्रोध राखे छे. तेओ नरकनुं आयुष् बांधे छे.

२६ जेओ गुणवान् पुरुषोना गुण गाय छे तेओ परभवमां यशवान् भाग्यवान् थाय छे.

२७ जेओ कोईनी पण निंदा करे छे तेओ परभवमां अपयश नामी दुर्भागी थाय छे.

२८ जेओ धननो मद करे छे तेओ निर्धन थाय छे.

२९ जेओ आप बडाइ करे छे तेओ हलकाई पामे छे.

३० जेओ आंधला लुला लंगडा विगेरेनी मस्करी करे छे तेओ आंधला लुला लंगडा विगेरे थाय छे.

३१ जेओ बलवान् थइ निर्बलने दबावे छे तेओ बलहीन थाय छे.

३२ जेओ गरीबने रीबावे छे तेओ पोते रीबाय छे.

३३ जेओ पारकी थापण ओळवे छे तेओने घरे चोरी थाय छे.

३४ जेओ परनो निहाको ले छे तेओनु घर बली जायछे.

३५ जेओ पारका उपर ईर्षा करे छे तेओ बांझीया रहेछे.

३६ जे स्त्री अनेक पुरुष भोगवे छे ते विष कन्या थाय छे.

३७ जे पुरुष अनेक परस्त्री भोगवे छे तेनुं भाग्य तत्काल नाश पामे छे.

३८ जे पुरुष वेश्याने भोगवे छे तेने बद सूल भगं विगेरे अनेक गुप्त रोगो थाय छे.

३९ जेओ हस्तमैथुन करे छे तेओने क्षय दम विगेरे महा-रोगो थाय छे

४० जेओ ज्ञानीने दान करे छे तेओने पर॰ वमां चिंता-मणि रत्न मळे छे.

४१ जेओ शीयल पाळे छे तेओनुं सौभाग्य वधे छे.

४२ जेओ तप करे छे तेओनुं कार्य सिद्ध थाय छे.

४३ जेओ शुद्ध शील एटले आचार पाळे छे तेओनी प्रतिष्ठा वधे छे.

४४ जेओ उत्तम भाव राखे छे तेओ लक्ष्मीवान् थाय छे.

४५ जेओ ज्ञानमां धन वापरे छे तेओने केवल्य ज्ञान थाय छे.

पाठ ३१ मो.

(सिद्ध चक्रनां ९ पद विषे कविता.)

[राग गजल.]

१ जगतमे नवपद जयकारी, सेवो सकल नरनारी;
धरी भावना सारे, आवो जिन देव के द्वारे. ज०.

२ बारे गुण शोभता जेना, सुरासुर सेवता जेने;
दीए छे देशना सारी, मिथ्या मद मोह निवारी. ज०.

३ निवारी वासना सर्वे, उपाधि दूर कीधी छे;
निजातम गुणना भोगी, नमुं सिद्धराज शुद्धयोगी. ज०.

४ पलावे पंच आचार, शमादिक गुण भंडार;
धरे गुण छत्रीशे ताजा, नमु आचार्य महाराजा ज०.

५ गणी सद्ज्ञानी गुणवंता, वलि सर्व संशय हंर्ता;
नमुं उवज्झाय पद चोथे, चले शिवपुरने पंथे. ज०.

६ मुनि गुणवंत वैरागी. क्षमादिक गुणथी सद्भागी;
नहि दिल मोहने माया, नमुं पंचम पद राया. ज०.

७ कदाग्रह हठ ज्यां नांही, दिठा सद्गु मार्ग दिलमांही;
सरल शुभ पंथने लीधो, सुदर्शन प्रसिद्धो. ज०.

८ समाधि अंतरे जेने, जणावे वारता सर्वे;
सुवस्तु दीव्य प्रसादे, नमुं गुण ज्ञान अह्लादे ज०.

९ सुस्थिरता ज्ञानमां जेथी, निवारे आश्रवो एथी;

सिद्धात्म सुखना संगे, नमुं चारित्र उच्छरंगे. ज०.

१० धरे शुभध्यान जे वनमां, निवारी मोहने मनमां;
चरण गुण शोभना सारी, नमु तप पद उपकारी. ज०

११ नवेनुं ध्यान जे करशे, सवी दिल दोष परिहरशे,
कहे जयचंद्र ते लेशे, सदा शिवसुख शुभ वेशे. ज०.

पाठ ३२ मो.

(उत्तम वैदक विषे.)

१ जैन बंधुओ ! तमो बहु दवा खावानी टेव पाडशो नहीं.

२ न छुटके दवा खावी ते पण थोडी खावी.

३ कुदरतना उपायोथी रोगो मटाडवानो उद्योग सीखो.

४ उष्ण (गरम) पाणी वापरवाथी अजीर्ण विगेरे २१ जातना रोगो मटे छे ते आ रीते केः—

१ राते अजीर्ण जणायतो सवारे २ रूपीआ भार उष्ण पाणी पीवुं सर्व अजीर्ण मटी जशे.

२ तावमां पाणीनी तरस लागे तो पाणी खुब गरम करी पीवुं. ताव जशे.

३ झाडो न उतरे तो सवारना ४ वागे गरम पाणीमां थोडुं लवण नाखी पी जावुं.

४ माथुं दुःखे तो गरम पाणीनो बाफ मस्तके लेवो के जेथी माथुं दुखतुं तरत मटी जशे.

५ तरतनो लकवो होय के तरतनो वा थयेल होय तो गरम पाणीनो बाफ आपवो के जेथी व्याधि आपो आप दूर थशे.

६ मोढे खील होय तो उनुं पाणीने उत्तम साबुथी दिवसमां बे त्रणवार धोवुं.

७ उनु पाणी पीवाथी कोई दिवस प्लेगनो रोग लागशे नहीं.

८ उना पाणीथी कोई पण चेपी रोग लागशे नहीं.

९ उनु पाणी ठंडु अने पथ्य छे.

१० पाणीना तमाम विकार गरम कर्येथी बली जाय छे. विगेरे.

५ उलटी बंध न थाय तो ' डीकामाली ' खावी.

६ घी थोडु खावुं पण दुध विशेष पीवुं.

७ सर्वे जातना तावमां लींबोलीनुं मींज उत्तम औषध छे.

८ उधरस थइ होय तो राते सेकेल चणा खाइ उपर पाणी पीवुं नहीं. अगर दुधने गरम करी थोडुं लवण

अने हलदर नाखी पी जावुं.

९ अशक्ति उपर शीलाजीत विगेरे खावुं.

१० वीर्यपात थतो होय तो जावंत्री अफीण कपूर ए ३ नी गोली करी हमेश २ खावी.

११ पुत्रप्राप्ति माटे शिवलींगीना बी दुध साथे पीवुं.

१२ सफरजल, दाडम, पोपैया ए ३ फल घणा उत्तमछे.

१३ बोर, कोलानुं शाक, केला नठारा छे.

१४ हमेश हरडे खावी.

१५ दुध साथे हमेश बालुं करवुं.

पाठ ३३ मो.

(हालकाले नवकारसी उजमणुं विगेरे धार्मिक कार्यो कयी रीते करवा ते विषे.)

[दोहरा.]

१ करो अन्न नवकारसी, एक दिवसनुं काम;
करो ज्ञान नवकारसी, रहेशे निश्चल नाम.

२ करो उजमणुं भावथी, चार आठ दिन काज;
करो ज्ञान उजमणुं, पामो शिवपुर राज.

३ छोडो आडंबर सहु, वरघोडादिक जेह;

पुस्तक तणी प्रभावना, करो धरी मन स्नेह.

४ पारेवादिक पक्षीने, जे नित्य आपो आहार;
ज्ञानदान आपो अरे, उत्तम नर अवतार.

५ उत्तम आ नर देह ते, फरी नहीं मलनार;
माटे ज्ञान सुदानथी, वर्त्तावो जयकार.

पाठ ३४ मो.

(मुनिनां लक्षण विषे.)

नीचे मुजब लक्षण वाला होय तेओने मुनि समजवा.

१ जेओ द्रव्यभाव–निश्चय व्यवहार समजता होय.

२ समयनां परावर्त्तन साथे उत्सर्ग अने अपवाद मार्ग समजता होय.

३ सप्त भंगीनुं स्वरूप समजता होय.

४ सप्तनय चार निक्षेप तेमज चार प्रमाण समजता होय.

५ आपणा संशयनुं अच्छी रीते सामाधान करता होय.

६ स्याद्वाद शैली समजता होय.

७ ओघो अने पात्र राखता होय.

८ अभ्यास करी दीक्षा लीधी होय.

९ ज्ञान अने क्रियामां ज्ञानने मूख्य गणता होय.

१० कदाग्रहथी रहीत होय.

ता० क० :—अत्रे कोई शंका करे के उपरना सर्वे लक्षणो ज्ञान—ग्रावतना आव्या,—ज्ञान कोइने ओछुं होय तो शुं करवुं? समाधान ए छे के तेवा अभण पुरुषोए ज्ञानीनी साथे विचरवुं पण एकलाए विचरवुं नहो. शास्त्रमा कह्यं छे के ज्ञानवीना स्वच्छंदपणे विचरवाथी क्रोडो क्रिया निष्फल जाय छे.

[उत्तराध्ययन सूत्रमां खास फरमान् छे के:—
“ नाणेण थ मुणि होई ” ज्ञान वडेज मुनि थवाय छे]

पाठ ३५ मो.

(मुनिने वंदना विषे कविता.)

[मामेरु मोंघा मूळनुं ए राग.]

१ ज्ञानी गुरुजीने वंदना, करता भव दुःख सर्वे जाय;
महासुख थाय मुनीश्वरने वंदना.

२ मुनि संशय वारे सर्वनो, मुनि ज्ञाने सूर्य समान;
महा दीप्तवान्—मुनीश्वरने वंदना.

३ मुनि रागद्वेष रहीत छे, मुनि समताळु समभाव;
शांतिरस दाव—मुनीश्वरने वंदना

४ ज्ञानीने सोळे ओपमा, उत्तराध्ययन सूत्र मोझार;
कहे गणधार—मुनीश्वरने वंदना.

५ मुनि वैर विरोध निवारता, पामे मोक्ष सुख स्वाद;
महा अल्हाद—मुनीश्वरने वंदना.

६ उपकारी जग परवडा, तारण तरण जहाज;
गरीबनीवाज—मुनीश्वरने वंदना.

७ धन्य दिवस धन्य ते घडि, भेटे गुरु ज्ञानी गुणवंत;
महामुनि संत—मुनीश्वरने वंदना.

८ जयचंद्र कहे करु वंदना, लली लली लागु पाय;
शरीर नमाय—मुनीश्वरने वंदना.

पाठ ३६ मो.

(श्रावकनां लक्षण विषे.)

नीचे मुजब लक्षण वाला होय तेओने श्रावक समजवा.

१ समभावी पणे एटले पक्षपात रहीत पणे होय.

२ ज्ञानीनी आज्ञा कबूल करता होय.

३ ज्ञाननो अभिलाषा (इच्छा) राखता होय.

४ ज्ञानी जननुं बहुमान करता होय.

५ ज्ञानना पुस्तको व्हेंचवा उपर प्रीति होय.

६ बीजा लोकोने जैन ज्ञान समजावी जैनी बनाववानी इच्छा होय.

७ आ मारा साधु–आ तो मारा नहीं–एवो बुद्धि जेनामां न होय.

८ संसारने असार समजता होय.

९ कोईनी निंद्या करवानो स्वभाव जेनामां न होय.

१० गुणग्राही पणु होय.

११ परोपकार करवानो गुण होय.

१२ आवक नो १/१० भाग पण ज्ञानमार्गे खरचता होय.

१३ नीति नम्रता शांतता विगेरे गुण होय.

१४ दयालु हृदय होय.

१५ विचारवान् होय, तेमज अंतःकरण निर्मल होय.

पाठ ३७ मो.

(बालकोमे यादशक्ति खोलवानो उपाय याने सरस्वतीचूर्ण)

१ ब्राह्मी, सतावरी, वज, उपलेट–आ चार वस्तुओ सरखे भागे लइ बारीक चूर्ण करी सरखा भागे साकरमां खावुं उपर गांयनुं दुध सेर ०।। उनु करी तेमां वरीयाली एलचो विगेरे नाखी पीवुं, एम १५ दिवस कर्येथी बुद्धिनो घणी वृद्धि थशे.

२ शंखावली, सुंठ, हीमेज ए ३ सरखा भागे लइ उपर मुजब करवुं, उपर द्राक्ष खावी.

३ बिदारी कंद पाणी साथे वाटी पीवुं उपर बदाम पाक खावो.

४ दुधमां बदाम केसर साकर एळची जायपत्र ए पांचे सरखा नाखी सद्गुरुनुं नामस्मर्ण करी पीवुं.

५ जेम बने तेम फलाहार विशेष करवो—पोपैया, सेरडी, दाडम, केरी, द्राक्ष विगेरे.

पाठ ३८ मो.

(चस्मा न आववा देवानो उपाय.)

१ हरडेने आंबला सरखा भागे लइ चूर्ण करी आखी रात पाणीमां पलाळी राखवुं सवारे ते पाणीथी हंमेश आंखो धोता रहेवुं.

२ घासलेटना दीवाथी कदीपण वांचवुं नहीं.

३ परस्त्रीपर कुदृष्टि करवी नहीं.

४ माखण ने कोपरानुं तेल आंखे चोपडता रहेवुं.

५ उनाळामां बजर (तपखीर) आंखमां नाखवी.

पाठ ३९ मो.

(आवेल चस्मा उतारवानो उपाय.)

१ नाकनी अणीए दृष्टि दइ स्थीर थवुं. (त्राटकथी पाणी झरवा देवुं.)

२ पाठ (३८) मा बतावेल पांचे उपायो करवा.

३ रात्रे वांचवानो रीवाज बंध करवो, जरुर होय तो घीना दीवाथी वांचवुं.

४ साचा मोतिनो उच्चा प्रकारनो सुरमो आंजता रहेवुं.

५ हमेश सद्गुरुना दर्शन करता रहेवुं.

६ जलाशय फुलवाडी विगेरेमां फरवानो परीचय राखवो.

७ हरघडीए चस्मा पहेरवानो रीवाज बंध करबो.

८ घीने बे हाथे करी १०० वार घसीने सवार सांज चोपडता रहेवुं.

९ स्त्रीसंग जेम बने तेम घटाडवो.

१० वीर्य जेम वधशे तेम आखनुं तेज पण वधशे.

११ बने तो स्त्रीना हाथनी रसोइ पण न खावी.

१२ वनमां, पर्वतो उपर, झाडनी घटामां विशेष रहेवुं.

१३ मरचा विगेरे गरम मसाला विशेष वापरवा नहीं.

१४ निर्मल जलथी सवार सांज ए बे वखत दररोज स्नान करवुं.

७ अढारे पापोमां 'असत्य वचन' ए मोटुं पाप छे.

८ आहारमां दुध विशेष वापरो.

९ मरचा तेल लवण विगेरे उपर विशेष प्रीति न राखो.

१० सोपारी आंबली बोर विगेरे न खाव.

११ सद्गुरुना पगनी रज लई तमारा मस्तके मूको.

१५ क्रोध करवो नहीं—कारण के क्रोधथी आंखनुं लोही बगडे छे.

पाठ ४० मो.

(विद्यार्थीओनुं जीवन सूत्र.)

१ मेवानी वस्तुओ विशेष वापरवी—चारोली, बदाम, काजुकळीआ, द्राक्ष, टोपरु, पस्ता विगेरे.

२ मन स्वच्छ राखवुं कारणके मन उपरज मगसनो आधार छे.

३ कोइ पण कार्य करवा धारो के तरत करो—आळस करशोज नहीं.

४ आळसनी टेव राखयेथी आळस वधशे माटे आळसनो मूळमांथीज नाश करवो.

५ असत्य बोलशो नहीं सत्य बोलवाथी गुन्हेगार गणाव तो पण सत्य छोडशो नहीं.

६ ईश्वरना दरबारमां (कुदरत०) एक असत्य छोडी बाकी दरेक गुन्हाओनी शिक्षा थोडी छे असत्य वचनरूप गुन्हानी शिक्षा घणीज मोटी छे—माटे असत्य गुन्हाथी बचो.

१२ तेमना वचन प्रमाणे चालो.
१३ तेमना दुर्गुणो स्हामुं जुवो नहीं.
१४ दुर्गुण स्हामा जोएथी गुण लइ शकाशे नहीं,
१५ सद्गुरु सर्वसद्गुण संपन छे एम द्रढ संकल्प करो.
१६ कोइ आवे तो तेने मीठासथी बोलावो. (आवोजी, बेशोजी, कहेशोजी, फरमाओजी विगेरे प्रेम उत्पन्न थाय तेवा उचारो काढवा.)
१७ दुनीयामां ' मीठु वचन ' एज वशीकरण छे.
१८ पैशा उपर प्रीति राखशो नही–कला. हुन्नर वेपार, विगेरे शीखो पछी पैशानो टोटो छेज नही.
१९ तमे लक्ष्मीना दास बनशो नही-परंतु लक्ष्मीने तमारी दासी बनावो.
२० कोई पण काममां प्रमाणिक पणुं तजशो नहीं.
२१ झाझा लोभमां तणाशो नहीं.
२२ रुपये एक आनी के ०॥ आनी नफो खाजो. वधारे खाशो नहीं.
२३ बोलेल वचन फरशो नहीं.
२४ धन, स्त्री, शस्त्र, अग्नि,–आ चारेमां क्रोडो अवगुण छे परंतु एकाद बे एवा गुण छे के तेने तज्येथी काम चालेज नहीं माटे संभाल पूर्वक काम लेजो.
२५ संपूर्ण विचार करीने काम आदरजो.

२६ आदरेल काम अधुरु मूकशो नहीं.

२७ धर्मशास्त्र, शरीरशास्त्र, (वैदक) हुनरशास्त्र, गणित-शास्त्र–आ चारे शास्त्रो पूर्ण शीखजो. जो चारे न शीखायतो एकाद तो जरुर शीखजो-

२८ ताव आववानुं जणायतो २६ वार दंड पीलजो एटले ताव आवतो अटकशे.

२९ तमारा मीजाजने काबुमां राखता सीखो. मीजाजने कदी हाथथी जवादेशो नहीं.

३० तमे जेटला–शरल थशो, समताळु थशो, नम्र थशो, गुणग्राही थशो, तेटला तमे योग्य पात्र थशो.

३१ योग्य पात्र थशो एटले तमे धर्मिष्ठ गणी शकाशो.

३२ जेओ ज्ञान मार्गे धन खर्चे छे तेओनेज श्रीवीर भगवान् श्रावक कहे छे.

श्रावकोने घंटानाद.

(दोहरा.)

१ सुणजो सर्वे श्रावको, घंटानाद उदार ;
जे-ज्ञान फेलाववा, व्हेंचो पुस्तकसार.

२ वांची लेशे ज्ञान जे, थाशे जैन श्रीकार ;
तेनो तमने लाभछे, अपरंपार अपार.

प्रशस्ति.

(दोहरा.)

१ भणे भणावे भावथी, वांचे पुस्तक जेह ;
कहे मुनि जयचंद्रजी, संपद पामे तेह.

२ संवत् ओगणीश चमोतरे, पुना सहेर मोझार :
माघ शुक्ल सप्तम रवि, कर्यो ग्रंथ तैयार.

३ जय जय श्री सद्गुरु, कहे जय धरी धीर ;
सज्जन सर्वे बोलजो, जय जय श्री महावीर.

સમાપ્ત.

प्रभावना करो.

(दोहरो.)

१ धर्म फलावे जगतमां, धन्य तेनो अवतार;
२ त्रीजे भव मुक्ति वरे, नहीं संदेह लगार.

श्रावक बंधुओ ! जमानो बदलाणो छे ते शुं नहि समजो ?

हालमां आर्यसमाजी ब्रह्मसमाजी विगेरे पोत पोतानो धर्म फेलाववा माटे सखत प्रयत्नो करी रह्या छे तो शुं तमा तेनो दाखलो नही ल्यो ? अवश्य लेशोज.

घणा प्रयासे बनावेल आवा अमूल्य पुस्तकोनो फेलावो करवामां कचास राखसो नहीं. १०० रुपीआना ४०० पुस्तको वेहेंचवाथी ४ क्रोड जेटलो धर्मनो लाभ मळशे.

पुस्तको मंगाववा तुर्त ऑर्डर लखो.